श्री कृष्ण कृपा

सत्संग-सेवा-सुमिरन एवं सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ

श्री कृष्ण कृपा संजीवनी

मासिक पत्रिका
जनवरी 2023

श्री कृष्ण कृपा की मधुर सौगात
जीओ गीता भावों के साथ

वर्ष 2023
की शुरुआत

वर्ष-25
जनवरी-2023
अंक-01

पौष
माघ
सम्वत्
2079 वि.

सत्संग, सेवा, सुमिरन
और सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ

श्री कृष्ण कृपा संजीवनी

मंगलाचरण

नमस्तुभ्यं भगवते, सकल जगत्स्थितिलयादेशाय।
दुरसितात्मगतये, कुयोगिनां भिदा परमहंसाय॥

(श्रीमद्भागवत 6/16/47)

भावार्थ - भगवन्! आपकी ही अध्यक्षता में सारे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होते हैं। कुयोगीजन भेद दृष्टि के कारण आपका वास्तविक स्वरूप नहीं जान पाते। आपका स्वरूप वास्तव में अत्यन्त शुद्ध है। आपको नमस्कार है।

लक्ष्य अच्छा, भाव सच्चा
और विश्वास पक्का-
'श्री कृष्ण कृपा' स्वतः अनुभव होगी।

मुख्यालय
श्रीकृष्ण कृपा धाम, परिक्रमा मार्ग
वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ.प्र.
फोन : 8899363611/22, 9368311113
E-mail : gieogita@gmail.com Website : gieogita.org

2023

अनुक्रमणिका

1. मंगलाचरण 3
2. अनुक्रमणिका, व्रत उत्सव 4
3. गुरुदेव की पाती 5
4. सम्पादकीय 6
5. श्रीमद्भगवद्गीता 7
6. स्वामी रामतीर्थ जी 8
   • श्यामलाल कश्यप
7. गीता चिन्तन 9
   • पूज्य गुरुदेव स्वामी गीतानन्द जी महाराज (बीर जी)
8. गीता प्रेरणा 10-11
   • गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
9. मानस गीता 12-13
   • वन्दना तनेजा, नोएडा
10. मानस गीता-एक विलक्षण भाव 14-15
    • गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
11. श्री राम कथा-मानस गीता 16-17
    • सुमित गोयल
12. चाहे कृष्ण कहो-चाहे राम 18-20
    • डा. मार्कण्डेय आहूजा
13. ज्ञान-साधना 21
    • गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
14. जिज्ञासा-समाधान 22-23
    • गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
15. गौमाता नन्दिनी 24-25
    • धर्मनारायण शर्मा
16. मकर संक्रान्ति 26
    • अनिल सिद्धार्थ
17. सकट चौथ 27
18. पुत्रदा एकादशी 28
19. कर्म ही उपासना है 29
    • स्वामी विवेकानन्द
20. नेता जी सुभाष चन्द्र बोस 30
    • डा. शंकरदयाल शर्मा
21. प्रभु मम विनय सुन लीजिए 31
    • गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
22. आओ जाने कान्हा के ब्रज को 32
    • सत्य नारायण शर्मा
23. महाभारत सार 33
    • पू. श्रीनारायण शर्मा
24. मन क्या है? 34
    • स्वामी शिवानन्द जी महाराज

2023

व्रत-पर्व-उत्सव (जनवरी)

तिथि	वार	दिनांक	पर्व
एकादशी	सोम	2	पुत्रदा एकादशी
पूर्णिमा	शुक्र	6	पूर्णिमा व्रत
तृतीया	मंगल	10	सकट चतुर्थी व्रत
अष्टमी	रवि	15	मकर संक्रान्ति
एकादशी	बुधवार	18	षट्तिला एकादशी
अमावस्या	शनिवार	21	मौनी अमावस्या
पंचमी	गुरुवार	26	बसन्त पंचमी
			गणतन्त्र दिवस

पूज्य महाराज श्री जी के आगामी कार्यक्रम

1 से 2 जनवरी	श्रीवृन्दावन 8899363611/22, 9368311113
4 से 5 जनवरी	अहमदाबाद (गाँधी धाम) 9215927999 9215050502
7 से 10 जनवरी	सहारनपुर गीता सत्संग 9837233430, 9528755585, 9412496602, 7983196543
12 जनवरी	कुरुक्षेत्र युवा दिवस 7027001890
15 जनवरी	अम्बाला 9017347222, 9996611777
17 से 18 जनवरी	राजस्थान 9215927999, 9541126726
21 से 24 जनवरी	मेरठ गीता सत्संग 9897795940, 9760022002, 9897013222, 7895775777
25 से 26 जनवरी	कुरुक्षेत्र-करनाल 7027001890, 9541126726
28 से 30 जनवरी	कोटद्वार गीता सत्संग 9837036725, 9541126726, 7983196543, 9557849790
31 जनवरी	भोपाल 9416031698, 9215050502
1 से 3 फरवरी ऊना (हि.प्र.)	गीता सत्संग 8219973669, 9417408590, 9812257014
5 से 7 जनवरी	बरेली गीता सत्संग 9760283190, 9897023067, 8171282222

@GitaManishi

गुरुदेव की पाती

श्री कृष्ण कृपा

गीता प्रिय साधक,

जय श्री कृष्ण !

समय की अपनी गति-स्थिति है! समय की गति कभी रुकती नहीं, अखण्ड प्रवाहमान है समय की गति। ऋषिकेश अथवा हरिद्वार 'हर की पौड़ी' स्थल में आप गंगा जी के जल प्रवाह को देखें, एक क्षण को भी ठहराव नहीं- बहाव-ही-बहाव! समय की स्थिति भी ऐसी ही है! समय के साथ जुड़ा सत्य यह भी कि जो समय हाथ से निकल गया, वह कभी किसी मूल्य पर भी लौट कर आने वाला नहीं; न ही समय खरीदा ही जा सकता है, न लौटाया! एक ही स्थिति हाथ में है- समय का विवेक पूर्वक सदुपयोग!

एक-एक दिन करते समय के इस सतत प्रवाह में वर्ष 2022 भी निकल गया! वर्ष 2023 का प्रारम्भ हो रहा है! यद्यपि हमारी भारतीय वैदिक सनातन परम्पराओं में नव संवत ही नव वर्ष के रूप में होता है, लेकिन वैश्विक मंच पर अधिकांशतः प्रथम जनवरी से ही इस रूप में लिया जाता है। इसी अनुरूप आओ, वर्ष 2023 का प्रारम्भ कुछ शुभ व सुदृढ़ नव-संकल्पों से करें- गीता पढ़ें, गीता पढ़ायें, आप जगें, औरों को जगायें, भारत माता की शान बढ़ायें, सबको हार्दिक शुभ कामनायें:

ज्ञानानन्द

जय श्री कृष्ण

जय श्री राधे

सम्पादकीय...

मनुष्य योनि कर्म प्रधान योनि है जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कर्म करने का प्रभाव निरन्तर गतिमान रहता है! श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से स्पष्ट संदेश दिया कि कर्म करना मनुष्य की अनिवार्यता है, कोई भी मनुष्य कर्म किए बिना नहीं रह सकता! कर्म करना मनुष्य जीवन की बाध्यता अवश्य है, परन्तु कर्मों का चुनाव एवं प्राथमिकता का क्रम निर्धारण में परमात्मा ने मनुष्य को स्वतन्त्रता प्रदान की है! नित्य नियम कर्मों के अतिरिक्त मनुष्य अपने विवेक, अन्तस प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए निश्चित ही अपने कर्मों को सार्थक और उपयोगी बना सकता है! मनुष्य जीवन की सीमित अवधि एवं प्रत्येक क्षण के मूल्य को समझते हुए हमें अपनी क्षमताओं और ऊर्जा का उपयोग अत्यन्त सावधानी से करना चाहिए! हमारे कर्मों का आधार, प्रकार और क्रियान्वयन-मांगलिक सद्भावित हो!

आइए वर्ष 2023 के प्रथम माह में पुनः प्रार्थना करें- कि गीता-प्रेरणाओं के सूत्रों को हम अपने व्यवहार में आत्मसात कर पाएं। हमारे कर्मों का प्रयोजन केवल कामनापूर्ति नहीं, वरन कर्म जीवन को सुन्दर और सुबासित बनाने का माध्यम बनें। इसी प्रार्थना के साथ!

जय श्री कृष्ण! जय श्री राधे!

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ द्वादशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय।।9।।

अथ, चित्तम्, समाधातुम्, न, शक्नोषि, मयि, स्थिरम्,
अभ्यासयोगेन, ततः, माम्, इच्छ, आप्तुम्, धनञ्जय ।।9।।

मुझ में ही मन सौंपने को यदि, काबिल तूँ खुद को समझता नहीं।
तो अभ्यास के योग की शरण से, कर इच्छा पाने की अर्जुन! मुझे।।

गाताङ्क से आगे :-

(अभ्यास से भगवत् प्राप्ति)

और

अथ	-	यदि (तू)
चित्तम्	-	मन को
मयि	-	मुझमें
स्थिरम्	-	अचल
समाधातुम्	-	स्थापना करने के लिये
माम्	-	मुझको
आप्तुम्	-	प्राप्त होने के लिये
न, शक्नोषि	-	समर्थ नहीं है,
ततः	-	तो
धनञ्जय	-	हे अर्जुन!
अभ्यासयोगेन	-	अभ्यास रूप योग के द्वारा
इच्छ	-	इच्छा कर।

(भगवदर्थ कर्म करने से भगवत्प्राप्ति)

श्रीभगवानुवाच

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि।।10।।

अभ्यासे, अपि, असमर्थः, असि, मत्कर्मपरमः, भवः।
मदर्थम्, अपि, कर्माणि, कुर्वन्, सिद्धिम्, अवाप्स्यसि।।10।।

हो न अगर तुझसे अभ्यास भी,
तो मेरे लिए कर्म कर तूँ सभी।
मेरे लिए कर्म करता हुआ,
तूँ सिद्धि परम तब भी पा जायेगा।।10।।

और यदि तू उपर्युक्त

अभ्यासे	-	अभ्यास से
अपि	-	भी
असमर्थः	-	असमर्थ
अपि	-	है (तो केवल)
मत्कर्मपरमः	-	मेरे लिये कर्म करने के ही परायण
भव	-	हो जा। (इस प्रकार)
मदर्थम्	-	मेरे निमित्त
कर्माणि	-	कर्मों को
कुर्वन्	-	करता हुआ
अपि	-	भी
सिद्धिम्	-	मेरी प्राप्ति रूप सिद्धि को
अवाप्स्यसि	-	प्राप्त होगा।

क्रमशः

'गीता ज्ञान संस्थानम्' - गीता जी की अवतरण स्थली धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में गीता जी की प्रेरणाओं को जन जन तक पहुँचाने हेतु निर्मित होने वाला अनूठा गौरवशाली केन्द्र! आओ जुड़ें जीओ गीता से, गीता ज्ञान संस्थानम् से!

स्वामी रामतीर्थ दिग्दर्शन

श्यामलाल कश्यप

गतांक से आगे...

भारतमाता

(1) दुनियाँ! हठ दूर परे हो! जागो! उठो! स्वतन्त्र हो! आजादी! आजादी!! आजादी!!!

(2) हाय आज भीष्म के देश में ब्रह्मचर्य पर दो बातें कहनी पड़ती हैं।

(3) हनुमान को महावीर किसने बनाया? इसी ब्रह्मचर्य ने।

(4) अमेरिका में भी यदि अधिक नहीं तो हिन्दुस्तान के बराबर के अवश्य ही पंथ और मत हैं।

(5) उधार धर्म कहने के लिये है और नकद धर्म करने के लिये है।

(6) मन में शंका रखते हो, उसकी जगह बन्दूक की गोली क्यों नहीं मार लेते?

(7) इसमें सन्देह नहीं जो खूब सोते हैं, वे जागते भी खूब हैं।

(8) व्याकरण भाषा का मशाल है।

(9) भारत में प्रेम और एकता के भावों का इतना अत्यन्त अभाव क्यों है?

इसके मुख्य कारण हैं-

(क) व्यवहारिक बुद्धि की न्यूनता।

(ख) जनसंख्या की अधिकता।

(10) व्यवहारिक ज्ञान की न्यूनता ही भारतवर्ष के पतन का कारण है।

(11) सुधार एक ऐसी वस्तु है जो प्रसन्नता के लिये दूर फासले पर ही रखी रहनी चाहिए।

(12) कायरों पर ही बहुमत का जादू चलता है।

(13) यदि जनसंख्या की समस्या बिना हल किये रह गई तो राष्ट्रीय एकता परस्पर मेल-मिलाप की बात-चीत आकाश पुष्प के समान कल्पना मात्र रहेगी।

(14) ऐसी पति-पत्नि के अपवित्र विवाह को, जो अपने निर्वाह का प्रबन्ध तक स्वयं नहीं कर सकते, पवित्र करने में, पवित्र वेद की ऋचायें भी अपना अभाव खो देती हैं।

(15) राम इस पत्र के लिये हिन्दी अक्षरों की सिफारिश करता है, क्योंकि बहुत शीघ्र हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा होना चाहती है।

(16) राम को सुनने से बढ़कर आवश्यक और काम हो ही नहीं सकता।

(17) इस समाजवाद में बादशाहों, राष्ट्रपतियों और धर्माचारियों की जरूरत नहीं पड़ेगी और सेनाओं की आवश्यकता न रहेगी। फिर विश्वविद्यालयों की कभी कोई जरूरत न पड़ेगी। क्योंकि हरएक मनुष्य अपना विश्वविद्यालय आप ही होगा।

-:राम का शंखनाद:-

'चाहे अकेले, चाहे अनेक शरीरों द्वारा काम करते हुए राम गम्भीरतापूर्वक प्रतिज्ञा करता है कि दस वर्ष के भीतर भारतवर्ष से अन्धकार और दुर्बलता दूर कर उसमें सच्चा जीवन भर देगा और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के पहले ही भारतवर्ष पुनः अपने पूर्व गौरव पर प्रतिष्ठित होगा। आप राम के इन शब्दों को नोट करलें।' (1904)

क्रमशः

गीता चिन्तन

विचारवान् को शोक कैसा

-ब्रह्मलीन पूज्य गुरुदेव
स्वामी गीतानन्द जी महाराज (वीर जी)

गतांक से आगे...

अजी, सहन तो करना ही पड़ता है, भेद इतना ही है कि आत्म-अभिमुख सहर्ष सहन करता है जबकि सृष्टि-अभिमुख अत्यन्त दु:खी होकर सहन करता है। अरे बाबा! क्या मजा आया- सहन भी किया और वह भी रो-रो कर! वाह! क्या बात है-

इस संसार के परिवर्तनशील स्वभाव को देख कर एक दार्शनिक महापुरूष ने कितना ही अच्छा कहा है-

"Change is the unchangeable law of Nature"

अर्थात्

'परिवर्तन'- इस दैवी प्रकृति का अपरिवर्तनीय नियम है।

विचारवान् इस अटल सिद्धान्त को सदा के लिये अपनी बुद्धि में दृढ़ करता हुआ संसार के इस विचित्र द्वन्द्व चक्र से अपने आपको उपराम कर लेता है और तटस्थ हुआ-हुआ विचरता है। मन की इस वैराग्यभरी अवस्था में संसार की कोई भी प्रिय-अप्रिय घटना उसके मन पर प्रभाव नहीं डाल सकती। इसी अवस्था को अपनाने के लिये हमारे भगवान् जी फरमा रहे हैं:-

'आगामापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत'

अर्थ:- हे भक्तवर अर्जुन! मात्राओं के यह सम्बन्ध आने-जाने वाले और अनित्य हैं, इसलिये तू इनको सहन कर! सहन कर!! सहन कर!!!

तत्त्वदर्शी-विज्ञानी

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत:
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभि:।।
(भगवद्गीता - 2/16)

अर्थात्

असत् वस्तु की नहीं सत्ता कहीं,
मगर सत् का अस्तित्व मिटता नहीं।
दोनों को जो तत्त्व से जान ले,
है ज्ञानी वही यह पहचान ले।।

हकीकत जरा होशमन्दी से देख।
बराबर हैं सब घर बुलन्दी से देख।।

दैवी प्रकृति का यह अटल नियम है:- कारण के अनुसार ही कार्य होते हैं और कार्य-कारण परस्पर अभिन्न होते हैं। प्रकृति के इसी अटल नियम के अनुसार इस दैवी प्रकृति का मुख्य कारण सर्वशक्तिमान् भगवान् जी हैं और यह प्रकृति उनका कार्य है अत: परस्पर अभिन्न हैं।

क्रमश:

गतांक से आगे-

बारहवाँ अध्याय
(भक्तियोग)

गीता प्रेरणा

—गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

श्रद्धा अचल जिसकी मुझमें ही हो,
समझ मुझको सब ले मेरी शरण जो।
धर्म रूप अमृत यह सेवन करे,
बहुत प्यारा है भक्त ऐसा मुझे।।

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।।

-12/20

परन्तु जो मुझमें श्रद्धा रखने वाले और मेरे परायण हुए भक्त इस धर्ममय अमृत का जैसा कहा जाये वैसा ही भलीभाँति सेवन करते हैं, वे मुझे अत्यन्त प्रिय हैं।

गीता प्रेरणाओं की आह्लादित करने वाली दिव्यता। जिनके जीवन में उपरोक्त सात श्लोकों में वर्णित उन्तालीस लक्षण हैं उनके लिए बार-बार केवल प्रिय शब्द लगाया; लेकिन जो श्रद्धापूर्वक भगवदाश्रित होकर इन लक्षणों को जीवन में लाने हेतु तत्पर हैं, उनके लिए '**भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः**'

12वें अध्याय के ये आठ श्लोक गीता का अमृताष्टक कहे गए हैं। स्वयं भगवान् ने धर्म्यामृतम् शब्द लगाकर इस प्रकरण को महिमा मण्डित किया है। इस श्लोक में विचार करने हेतु अनेक महत्वपूर्ण संकेत हैं। प्रथम तो यह है कि मनुष्य का वास्तविक धर्म इन लक्षणों को जीवन में आचरित करना है। धर्म केवल मजहब या सम्प्रदाय अथवा मत-मतान्तर नहीं, जीवन के तत्व-सत्व और महत्व को प्रकट करने वाले ये लक्षण ही धर्म हैं। केवल पूजा पाठ करने मन्दिर तीर्थ अथवा किसी भी धर्म स्थान में जाने, माला फेरने आदि से ही कोई धार्मिक नहीं बनेगा, धार्मिकता की कसौटी ये लक्षण हैं। **अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्** (12/13) से प्रारम्भ ये लक्षण यदि जीवन में आ जायें तो सोचो मानवता मुखरित होगी या नहीं? क्या पारस्परिक दुर्भावनायें दुर्गुण, दुराचार,

भ्रष्टाचार यहाँ तक कि आतंक भी रह पाएगा? यह सब इसीलिए है क्योंकि धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझा ही नहीं। यह भी विचार करके देखो- क्या गीता में वर्णित इस धर्म की आज समूचे विश्व को आवश्यकता नहीं है?

धर्म के साथ अमृत शब्द स्वर्णसौरभ संयोग है। केवल धर्म नहीं, यर्थाथ अमृत। देवलोक का अमृत भी इसके सामने नगण्य है। यह ऐसा अमृत है जो जीवन को जन्म मरण के चक्र से मुक्त कर अमर शाश्वत परमधाम का अधिकारी बना दे। समाज से दुर्भावना का विष मिटाकर सद्भावना का अमृत प्रकट कर दे। चिन्तारूपी विष को सदा-सदा के लिए समाप्त कर भगवद्-चिन्तन का रस घोल दे।

लेकिन सीधी बात केवल पढ़ने-सुनने से नहीं। धर्म केवल पढ़ने-सुनने, पढ़ाने-सुनाने तक के लिए नहीं **'यथोक्तं पर्युपासते'**। जैसा कहा गया है, भली प्रकार वैसा आचरण करने से शास्त्रों ने धर्म को आचरण का विषय बताया है- **धर्मं चर** आचरण भी कोरी औपचारिकता से नहीं। पूर्ण श्रद्धा के साथ अहं को साथ रखकर नहीं सम्भव होगा, भगवान् के परायण होकर श्रद्धा और भगवद्परायण हुए बिना पहली बात तो यह कि धर्म अच्छी तरह आचरण में आयेगा ही नहीं, यदि कुछ कुछ आ भी गया तो अहंकार साथ रहेगा जो अन्ततोगत्वा पतन का ही कारण बनेगा।

इस अध्याय में निहित अत्यन्त मधुर-प्रेरक अलौकिक भावों को सुबास से अपने जीवन को महकायें। भक्ति जीवन की आवश्यकता है और भगवत्प्राप्ति जीवन का प्रथम परम लक्ष्य- ऐसा निश्चित कर लें। भक्ति को श्री भगवान् ने सुगम साधन के रूप में प्रस्तुत किया है और स्वयं के लिए चार श्लोकों में भिन्न-भिन्न चार साधनों के द्वारा सहजता से प्राप्य बताकर अपना एक उदार स्वरूप हमारे सामने रखा है। जो साधन अपनी रुचि के अनुसार सुगम लगता है उसे स्वीकार करें और भगवत्प्राप्ति के उद्देश्य को साथ लेकर जीवन जिये। **'दुर्लभ साज सुलभ करि पावा'** (मानस) दुर्लभ अवसर प्रभु कृपा से सुलभ हुआ है, हाथ से निकल न जाये सजग रहें।

13वें से 19वें श्लोक तक में वर्णित ये लक्षण मात्र सिद्ध भक्तों के हैं, ऐसा सोचकर इनसे उदासीनता न आ जाये अध्यात्म मार्ग का सिद्धान्त है-सिद्ध की अवस्था ही साधक की प्रेरणा है। इन लक्षणों को अपने जीवन की सशक्त प्रेरणा बनायें। इन्हें दर्पण की भाँति अपने सामने रखें। यही दर्पण ही तो बताएगा कि कमी कहाँ है? भक्ति करते हुए पूर्णता की स्थिति क्यों नहीं बन रही? पूजा-पाठ, नियम-साधन, व्रत-अनुष्ठान आदि सब अच्छे हैं लेकिन भगवान् की प्रियता तो इन लक्षणों को जीवन के आचरण में लाने से है। इस अध्याय से हमारे मन में जिज्ञासा जाग्रत हो कि भगवान् का यह संकेत-ऐसा भक्त मुझे प्रिय है, मेरे लिए होना चाहिए। हो सकता है, असम्भव बिल्कुल नहीं। अभी तो गीता पढ़ते सुनते यह भाव बना लो कि भगवान् मुझे ही कह रहे हैं, केवल मुझे ही। लेकिन अति आत्मविश्वास में वास्तविकता पीछे न रह जाये, यह भी ध्यान रहे। लक्षण जीवन में हों इसके प्रति विशेष जागरूकता। मुख्य ध्यान यही **'मयि आवेश्य मनो ये माम्'** (12/2) मन अच्छी तरह ईश्वरीय भाव भक्ति में युक्त हो जाये।

शबरी को भगवान् राम ने नवधा भक्ति का उपदेश दिया। शबरी कुछ सोच में पड़ी। शबरी के राम समझ गए। स्पष्ट कर दिया- नवधा भक्ति में से प्रयत्नपूर्वक एक भी जिसके जीवन में आ गई- **अतिशय प्रिय सोइ भामिनी मोरे।** (लेकिन) **सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे।।** कैसे सारी भक्ति शबरी के जीवन में आई? एक ही बात। मन पूरी तरह राम में और राम मन में। भक्तिमान् भक्तियुक्त अवस्था।

हम क्यों नहीं इस अवस्था में आ सकते? जब स्वयं भगवान् कह रहे हैं, तब असम्भव का तो प्रश्न ही नहीं। जगाओ स्वयं को। अभी से श्रद्धापूर्वक भगवद् आश्रित होकर प्रयत्न शुरु कर दो। गीता उपदेष्टा की इस दिव्य गीता-प्रेरणा से स्वयं को पूर्ण उत्साह से भर लो - **भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।** आचरण में लाने हेतु प्रतिबद्ध भक्त मुझे अतिशय प्रिय हैं। आओ इस सूची में अपना नाम पक्का करवा लें।

मानस गीता

(रामकथा-कुरूक्षेत्र)

19 नवम्बर - 27 नवम्बर 2022

सत्संग की महिमा अनन्त है। सत्संग केवल कथा श्रवण नहीं, वरन एक आध्यात्मिक घटना है जिसके फलस्वरूप अन्तस में सद्विचारों का रोपण होता है। सत्संग की ऊर्जा से आत्मिक बल का पोषण होता है। मानव-कल्याण हेतू 'सत्संग, सेवा, सुमिरन' के भाव को जीवन और व्यवहार में लाने के लिए निरन्तर प्रयासरत गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज के तत्वाधान और प्रेरणा स्वरूप-धर्मनगरी कुरूक्षेत्र में नवम्बर से 27 नवम्बर तक एक अत्यन्त भव्य और दिव्य सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें विक्वविख्यात राष्ट्र सन्त मोरारी बापू जी द्वारा ***'मानस-गीता'*** प्रसंग पर अत्यन्त भावपूर्ण प्रवचन हुआ, जिसका उल्लास और आनन्द हज़ारों-हज़ारों लोगों के मन:पटल पर चिरस्थाई हो गया।

श्रीमद् भगवदगीता की प्राकटय स्थली कुरूक्षेत्र की धरा जैसे इस सत्संग के आयोजन से आप्लावित हो रही थी! ब्रह्म सरोवर के अत्यन्त निकट एक विशाल अनुष्ठान जैसे समूचे वातावरण को सुवासित कर रहा था। सबके न केवल कदम, वरन वृत्तियाँ भी उन्मुख व अग्रसर थी - 19 नवम्बर की दोपहर मानस गीता के दिव्य प्रसाद के श्रवण और सेवन के लिए! आयोजन के केन्द्र बिन्दु गुरूदेव की संकल्पित और सद्भावित गतिशीलता - जीओ गीता परिवार और गीता ज्ञान संस्थानम् के हर भाग में प्रतिबिम्बित हो रही थी। कृपाबिहारी जी के मन्दिर से उद्भासित रश्मियाँ जैसे वरदहस्त सी स्पर्श कर रही थीं।

प्रथम दिवस के आयोजन में शुभारम्भ - सन्त आशीर्वचन, दीप प्रज्जवलन, मानस गीता पूजन और मंगलाचरण से हुआ!

दीप प्रज्जवलन उपरान्त जयराम आश्रम के परमाध्यक्ष पूज्य ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी जी द्वारा - पूज्य मोरारी बापू का कुरूक्षेत्र की धर्मधरा पर आने पर अभिवादन और 31 वर्ष पूर्व हुई रामकथा का पूर्नस्मरण, तत्पश्चात् मलूक पीठाधीश्वर सन्त राजेन्द्रदास जी द्वारा नाम संकीर्तन धुन के साथ बापू का धन्यवाद सबको कथाश्रवण का सौभाग्य प्रदान करने के लिए, परमपूज्य कार्ष्णी महाराज स्वामी श्री गुरूशरणानन्द जी महाराज का स्नेह आशीष हम सबको मिला, इसके बाद रामायण और गीता, जय श्री राम एवं जय श्री कृष्ण की मर्यादाओं और आदर्शों का उदाहरण देते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री जी मनोहर लाल खट्टर जी द्वारा - कार्यक्रम का सफलता और मांगलिक ध्येय की पूर्ति के लिए शुभकामना संदेश, साथ ही लोकसभा स्पीकर माननीय ओम बिरला जी के द्वारा ***'मानसगीता'*** सत्संग आयोजन के लिए जीओ गीता परिवार के सौभाग्य की सराहना की! आयोजन के सूत्रधार स्वरूप स्वामी ज्ञानानन्द जी ने व्यासपीठ पर शोभायमान पूज्य मोरारी बापू को श्री रामकथा का पर्याय बताते हुए कहा कि मानस मोरारी बापू के प्राण, आन और उनके जीवन की संजीवनी है। उनके श्रीमुख से मानसगीता का वर्णन गीतास्थली कुरूक्षेत्र की भूमि को निश्चित आह्लादित और आनन्दित करेगी! महाराज श्री ने बताया कि सुसंयोग ही है कि आज से (19 नवम्बर) अष्टादश (अठारह) दिवसीय गीता जयन्ती समारोह का शुभारम्भ भी कुरूक्षेत्र में हुआ!

व्यासपीठ पर सुशोभित पूज्य बापू जी द्वारा मानस-गीता का शुभारम्भ मानस चौपाई के साथ हुआ।

उपस्थित विशाल जनसमूह एवं सन्त समाज सबकी श्रवणेंद्रियाँ प्रतीक्षारत थी बापू के भावरस में स्वयं को निमग्न करने के लिए बापू ने अपने प्रारम्भिक उद्‌बोधन में मानस-गीता की भूमिका स्वरूप- ***मानस अर्थात हृदय*** इस तात्विक अर्थ से हम सबके हृदय में सत्संग श्रवण की अभीप्सा को स्थिर कर दिया। गीता उपदेश की पृष्ठभूमि में जाते हुए बापू ने कहा कि अर्जुन का विषाद - गीता उपदेश का कारण बना, अर्जुन विषाद ग्रस्त हुआ उस विषाद से निवारण के लिए श्री कृष्ण-अर्जुन संवाद हुआ और फलस्वरूप अर्जुन को निर्भयता का प्रसाद मिला था अर्थात श्रीमद्‌भगवदगीता के प्रारम्भ में विषाद, मध्य में संवाद और अन्त में प्रसाद है। विषाद से प्रसाद की इस यात्रा को हमें भी अपने-अपने जीवन में तय करना है। भूमिका उपरान्त- देव वन्दना का अत्यन्त व्यावहारिक और तात्विक अर्थ परिलक्षित करते हुए बापू ने कहा-किसी भी कार्य के आरम्भ में प्रार्थना स्वरूप-वन्दना तो करनी ही चाहिए, परन्तु वन्दना का तात्विक विस्तार करते हुए उन्होंने बताया कि गणेश वन्दना - अर्थात विवेक की वन्दना, सूर्य वन्दना अर्थात प्रकाश में जीने का संकल्प, विष्णु वन्दना अर्थात दृष्टि और विचारों में विशालता, शिव वन्दना अर्थात् विश्वकल्याण की भावना और दृढ़ विश्वास और अटूट श्रद्धा अर्थात दुर्गा-वन्दना।

अभिभूत थे हम सब देव वन्दना की इस उच्चतम परिभाषा को हृदयग्राही करके। मानस धुनों के साथ कार्यक्रम के प्रथम सत्र को विराम!

द्वितीय दिवस के सत्संग सत्र के प्रारम्भ में अरण्यकांड की सुन्दर व सुखद चौपाई।

"एक बार प्रभु सुख आसीना।
लक्ष्मन वचन कहे छल हीना॥
सुर नरमुनि सचराचर साईं।
मैं पूछऊं निज प्रभु की नाईं।

इस चौपाई को मानस गीता के केन्द्र में रखते हुए, द्वितीय दिवस के प्रवचन में बापू ने कहा कि मानस में गीता, और गीता में मानस है ही, क्रमिक अन्तर, स्थान अन्तर और पात्र अन्तर होने के बाद भी दोनों के तात्विक-प्राण सम हैं। मानस का अर्थ हृदय होता है, और श्रीमद्‌भगवदगीता में भगवान् कृष्ण ने स्वयं कहा- ***"गीता मम हृदयम पार्थ"*** अर्थात गीता हार्दिक-ग्रन्थ है, मानस-ग्रन्थ है।

सार्थक जीवन जीने के लिए मानस व गीता दोनों को उत्तम मार्गदर्शिका बताते हुए बापू ने कहा इन दोनों अनुपम ग्रन्थों को सदैव साथ रखो। कनेक्ट, करैक्ट और कलैक्ट (Connect, Collect, Correct) के क्रम को स्पष्ट करते हुए उन्होंने रामायण और गीता से जुड़ने का सार सूत्र हम सबको दिया।

तृतीय दिवस के सत्संग सत्र के प्रारम्भ में हम जीवन सबको पिछले दो दिन के सत्संग की पुनरावृत्ति करवाते हुए महाराज श्री ने कहा कि जीवन के परम सौभाग्य के क्षण हैं यह जब गीता की प्राकट्य स्थली कुरुक्षेत्र पर मानस-गीता के रूप में अद्‌भुत चिन्तन की एक पवित्र और दिव्य धारा प्रवाहमान हो रही है, आह्लादित मुद्रा में गुरुदेव ने बापू द्वारा किए गीता जयन्ती पर दो दीपक और दो पुष्प चढ़ाने के आह्वान् का पुनर्स्मरण करते हुए मंगलकामना की, कि भावपूर्वक गीता जयन्ती पर जलाऐं दो दीपक हमारे जन्म-जन्म के अन्तः तमस को समाप्त करें। तत्पश्चात प्रथम दिवस के तीन भाव सूत्र- 'शिष्यस्तहं', 'तत्क्षामये' और 'किरिस्ये वचनत्वं' की पुनरावृत्ति कर हम सबको अर्जुन बनकर समर्पण क्षमाभावना और शरणागति के मार्ग पर प्रशस्त होने की प्रेरणा दी।

तीसरे दिन के व्यासपीठ से प्रसाद स्वरूप मिले अनेक सूत्रों में जिन शब्दों की अमिट छाप हृदयांकित हो गई-वे थे भारत जैसे देश ने गीता को कोर्ट में सत्यसाक्षी रूप में रखा है वह ठीक है परन्तु गीता कोर्ट में ही नहीं, हृदय में रखे जाने वाला ग्रन्थ है! महसूस करके देखिए साहब- गीता साक्षात् प्रभु की वाणी है, यदि गीता को हाथ में लिया और कृष्ण की धड़कन महसूस नहीं हुई तो हम संवेदन शून्य है, अचेतन है! बापू का भाव-चरम, मानस के प्रति स्पष्ट अनुभूत हुआ जब उन्होंने कहा कि- भक्ति योग अध्याय पढ़ते हुए आँखों के कोने नम होने ही चाहिए! बापू के शब्दों के पीछे उनकी गहन और अनुभूत भावना सचमुच हृदय स्पर्शी ही नहीं है, हृदयपरिवर्तनी भी थी। मानस और गीता दोनों परवाज़ हैं, जीवन की उड़ान के लिए ऐसा कहकर बापू द्वारा गुनगुना पंक्तियाँ-

"जाने क्या जादू भरा हुआ
भगवान् तुम्हारी गीता में"

पूरे पांडाल को गीतामय करने में सक्षम थीं।

- वन्दना तनेजा (नोएडा)

क्रमशः

॥ श्री कृष्ण कृपा ॥

मानस गीता

एक विलक्षण भाव

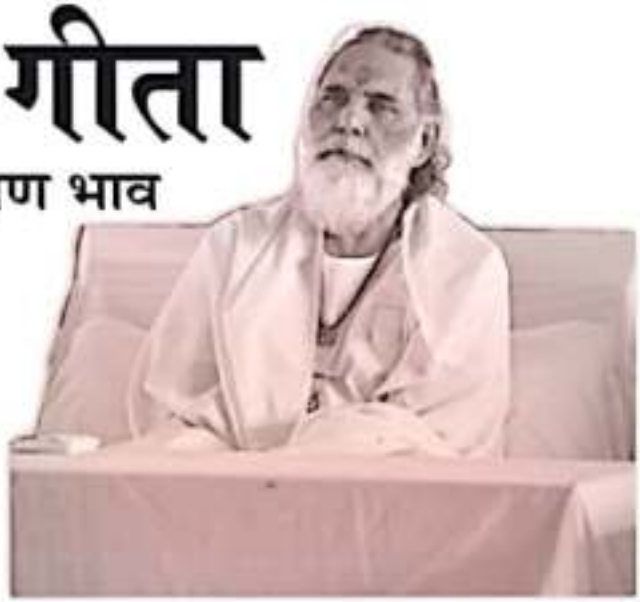

धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र श्रीमद्भगवदगीता की अवतरण स्थली और **'जीओ गीता'** भगवद्गीता को व्यापक वैश्विक और व्यावहारिक प्रेरणा बनाने का सीधा-सीधा **'आह्वान्'** अनेकों के मन यह आश्चर्य मिश्रित जिज्ञासा स्वभाविक थी कि जीओ गीता से गीता ज्ञान संस्थानम् की ओर से गीता की उपदेश स्थली में श्रीराम कथा का आयोजन!

- 19 से 27 नवम्बर 2022 पूज्य संत मोरारी बापू जी द्वारा श्रीराम कथा वस्तुत: कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरक अनुष्ठान! सर्वप्रथम तो यह है कि हजारों-हजारों की प्रत्यक्ष उपस्थिति तथा आस्था चैनल के माध्यम से विश्वभर में लाखों-लाखों श्रद्धालुओं ने व्यासपीठ से यह साक्षात् अनुभव किया कि भगवद् गीता और श्रीराम चरित मानस किसी भी प्रकार से अलग-अलग भाव के ग्रन्थ नहीं हैं। जो प्रेरणायें श्रीगीताजी में सार रूप से है, श्रीराम चरित मानस में कथा प्रसंगों के माध्यम से उन सब का विस्तार है। तत्त्व दोनों ग्रन्थों का एक ही है।
- इसी लिये पूज्य मोरारी बापू जी से श्रीराम कथा को मानस गीता रूप में श्रवण करवाने का आग्रह किया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार ही नहीं किया अपितु जीओ गीता के द्वारा प्रचारित इस भाव को सिद्ध किया :

मानस गीता - गीता मानस,
तत्त्व एक दोऊ नाम।
आओ, अनुभव करके देखो,
मानस में गीता ज्ञान॥

- व्यासपीठ से इस तथ्य को बहुत सरल-सरस प्रेरणा के रूप में सब ने अनुभव भी किया कि मानस में गीता के तत्त्व का किस-किस प्रकार से विस्तार है तथा स्वयं श्रीराम चरित मानस में कितने प्रकार से गीता का वर्णन है।
- भारतीय मनीषा के प्रचलित तीन ग्रन्थों- श्रीराम चरित मानस, श्रीमद्भागवत पुराण और श्रीमद्भगवत गीता को पूज्य बापू ने व्यासपीठ पर प्रेरणार्थ अंकित तीन भावों- सत्य-प्रेम-करुणा के रूप में अत्यन्त तर्क संगत ढंग से प्रस्तुत किया- श्रीराम चरित मानस से सत्य, श्रीमद्भागवत से प्रेम और श्रीमद्भगवद गीता भगवान कृष्ण की समूची मानव जाति ही नहीं प्राणी मात्र के लिये अर्जुन के निमित्त से प्रगट हुई करूणा है। श्रीराम कथा के मध्य प्राय: सबको यह अनुभव होता रहा कि भगवान् राम प्रिय हों, हनुमान जी महाराज प्रिय हों, कहने वाले संत मुरारी बापू स्वयं गीता प्रिय की भूमिका में दिखाई दिये। श्रीराम कथा मय बापू तो स्वाभाविक है ही,- वर्षों-वर्ष का लम्बा श्रीराम कथा अनुभव, लेकिन यहाँ गीताजी की अवतरण स्थली का एवं गीताजी का प्रभाव, गीता जयन्ती उत्सव की, निकटता का प्रभाव मोरारी बापू जी भी गीतामय बापू के रूप में। लगभग नित्य प्रति उनके द्वारा भावपूर्वक गुनगुनाया गया! यह भाव:-

जाने क्या जादू भरा हुआ,
भगवान् तुम्हारी गीता में।
मन-चमन हमारा हरा हुआ,
भगवान् तुम्हारी गीता में।

- समूचा पाण्डाल ही नहीं समग्र वातावरण

उस समय गीतामय अनुभव होता था। भला कौन कह सकता है कि अलग-अलग हैं ये दो ग्रन्थ। वस्तुत: स्वयं मोरारी बापू जी भी गीता के जादुई प्रभाव से अछूते नहीं रह पाये। यद्यपि व्यासपीठ से उनके द्वारा अनेक प्रेरक आह्वान् हुए, लेकिन गीता प्रेमियों के साथ-साथ मानस प्रेमियों को भी इस आह्वान् ने अत्यधिक आह्लादित-प्रभावित एवं प्रेरित किया।

गाओ गीता
पीओ गीता
जीओ गीता !

- श्री गीता जयन्ती उत्सव विश्व भर में उत्साह एवं उल्लास पूर्वक आयोजित हो- व्यासपीठ के इस आह्वान् ने भी अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव एवं जीओ गीता के गीता जयन्ती के प्रति भाव को सबल, सम्बल प्रदान किया।
- पूज्य बापू द्वारा यह कहना कि गीता जयन्ती के दिन घर परिवार प्रतिष्ठान में गीता जी तो सम्मानपूर्वक विराजित हों ही, लेकिन साथ ही दो फूल और दो दीये गीता जी के समक्ष सभी प्रज्जवलित करें 'यही मेरी व्यासपीठ से दक्षिणा है कि गीता जयन्ती पर हर घर में दीपोत्सव और यही मेरी दृष्टि में सच्ची दीपावली' व्यास पीठ के इस आह्वान् ने समूचे पाण्डाल में भावुकता का वातावरण बना दिया।
- हर कोई गीता पाठ करने का नियम अवश्य ले- स्वयं मैं पिछले 70 वर्षों से लगातार गीता पाठ कर रहा हूँ। व्यासपीठ से पूज्य मोरारी बापू जी का यह भाव भी एक व्यापक प्रेरणा बना!
- वस्तुत: श्रीराम कथा - मानस गीता का यह आयोजन भगवत् गीता एवं गीता जी की अवतरण स्थली कुरुक्षेत्र की गरिमा वृद्धि का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं मजबूत माध्यम बना। व्यास पीठ से बार-बार कुरुक्षेत्र के लिये पावन धरा, दिव्य धरा, सेव्य धरा का उद्बोधन गीताजी की इस धरा के महत्व से समूचे विश्व को परिचित करवा रहा था।
- अनेक महान् सन्तों की गरिमामयी उपस्थिती एवं उनके व्यासपीठ से आशीर्वचन आयोजन के लिये स्वर्ण सौरभ संयोग सिद्ध हुआ। पूज्यपाद कार्ष्णि स्वामी गुरू शरणानन्द जी, जूना पीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरी जी, मलूक पीठाधीश्वर संत राजेन्द्रदास जी, भानुपुरा पीठाधीश्वर स्वामी ज्ञानानन्द तीर्थ जी, स्वामी परमात्मानन्द जी, स्वामी धर्मदेव जी, ब्रह्मचारी ब्रह्मस्वरूप जी, हरियाणा प्रान्त एवं विशेष रूप से धर्मभूमि कुरुक्षेत्र के प्रमुख सन्तों की उपस्थिति को वन्दन! अपनी सिख परम्परा के कई प्रमुख सन्तों का आगमन और पूरा समय कथा में उपस्थिति वस्तुत: सद्भावना की दिव्यता! पूज्य संत बाबा भूपिन्द्र सिंह जी (पटियाला), संत बाबा जोगा सिंह जी (करनाल), संत बाबा गुरविन्द्र सिंह जी (मांडी वाले), संत बाबा राजेन्द्र सिंह जी (इसराना), संत बाबा जसदीप सिंह जी (भम्भोली), जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह जी, पूज्य बापू का व्यासपीठ से गुरूवाणी के पदों का मर्यादित भाव से गायन एवं गुरूद्वारा छठी पातशाही में दर्शन एक अद्भुत - अनुठी प्रेरणा।
- श्रीराम जन्मोत्सव के पश्चात् पूज्य बापू का तीन स्थलों पर चल रहे भण्डारे में प्रसाद ग्रहण करने जाना सेवादारों के लिये उत्साहवर्धक टॉनिक की तरह रहा।
- भण्डारों में प्रात: से देर रात्रि तक हजारों-हजारों का सेवा लाभ देना आह्लादित करने वाला भाव रहा।
- मेदान्ता गुरूग्राम एवं सर्बत दा भला पानीपत के साथ मुख्य रूप से कुरूक्षेत्र के अनेक चिकित्सकों की सेवा भूमिका अत्यन्त सराहनीय रही। 15000 से अधिक की ओ.पी.डी. एवं निशुल्क समग्र चिकित्सा दवा वितरण आदि- एक वन्दनीय भाव।
- भण्डारा, आवास, स्वच्छता एवं अन्य अनेक सेवाओं में लगे सैकड़ों कार्यकर्ता भाई-बहिनों का सेवा समर्पण उनके लिये तो सौभाग्य था ही, आयोजन की भी सुव्यवस्था का आधार - तभी तो व्यासपीठ से पूज्य बापू जी ने भी पीठ थपथपाते हुए कहा - सम्भवत: प्रथम बार मेरे पास लिखित या मौखिक शिकायत किसी भी व्यवस्था को लेकर नहीं आई। प्रभु प्रसन्न - व्यासपीठ प्रसन्न-**प्रसीद देवेश जगन्निवासा** श्री कृष्ण कृपा का आधार, श्री कृष्ण कृपा को आभार - सबके लिये हार्दिक शुभकामनायें।

—गीता मनीषी

कुरुक्षेत्र की दिव्य धरा पर हुआ

श्री राम कथा मानस गीता

का अद्भुत एवं अलौकिक आगाज़

– सुमित गोयल, कुरुक्षेत्र

मार्गशीर्ष माह की दशमी तिथि को कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर के तट पर भव्य पंडाल में श्री राम कथा मानस गीता का दिव्य एवं अलौकिक आगाज हुआ। इन अद्भुत एवं ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बनने के लिए लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला एवं हरियाणा के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी भी पहुँचे। श्री राम कथा मानस गीता के शुभारम्भ के लिए सभी गणमान्य व्यक्ति श्री श्री कृपा बिहारी मन्दिरम्, गीता ज्ञान संस्थानम् में एकत्रित हुए जहाँ पूजा-अर्चना हुई एवं स्वयं श्री मनोहर लाल खट्टर ने अपने सिर पर श्री रामायण जी को धारण किया। मन्दिर की सीढ़ियों से उतरकर रामायण मुख्य यजमान श्री राज सिंगला जी को सौंप दी गई जिन्होंने पूर्ण श्रद्धाभाव से अपने सिर पर धारण की और पैदल यात्रा कर व्यास पीठ पर लेकर पहुँचे। मन्त्रोच्चारण एवं श्री हनुमान चालीसा के पाठ के साथ दीप प्रज्वलन कर इस भव्य आयोजन का शुभारम्भ हुआ। मोरारी जी बापू श्री राम कथा अमृत वर्षा के लिए व्यासपीठ पर विराजमान हुए। पूरा पण्डाल भक्ति परम्परा में डूबा हुआ नजर आ रहा था।

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने कहा कि कुरुक्षेत्र धर्म व अध्यात्म की पवित्र भूमि है जहाँ स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी दिव्य वाणी से गीता का संदेश दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि श्री रामचरितमानस ने नौजवानों को आदर्श व राममय जीवन जीने का संदेश दिया एवं श्रीमद्भगवदगीता ने निष्काम कर्म का संदेश समूची मानवता के लिए दिया। आज श्रीकृष्ण भूमि से श्री राम कथा मानस गीता का व्याख्यान एक अविश्वसनीय व अकल्पनीय अवसर है। रामायण एवं महाभारत सभी ग्रन्थों के सिरमौर है। इन ग्रन्थों की वाणी केवल भारत तक ही सीमित नहीं है अपितु विश्वव्यापी प्रति की है। जब राम नाम के स्वर श्री कृष्णमय वातावरण में घुलेंगे तो निश्चित रूप से अमृत वर्षा होगी।

इस अवसर पर हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री रामचंद्र जी ने रामायण के माध्यम से जीवन की मर्यादाओं के बारे में हमें ज्ञान दिया है और श्री कृष्ण जी ने गीता के माध्यम से जीवन का सार जन कल्याण हेतु सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेषित किया है। अलग-अलग विद्वानों ने श्री रामराज्य की परिकल्पना अपने-अपने शब्दों में की है। उन्होंने कहा कि सत्ताधारी का यह परम कर्तव्य है कि वह बिना किसी भेदभाव की अपनी प्रजा का पालन करें एवं उनके कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहे।

इन अलौकिक क्षणों में रमणरेती से कार्ष्णी स्वामी श्री गुरु शरणानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में गीता की प्रेरणाओं को जीवन में धारण करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि इस संसार रूपी वृक्ष के रक्षक वेद हैं। गीता के ज्ञान के मूल आशय में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण विद्यमान है। इस अवसर पर मलूक पीठाधीश्वर राजेन्द्र दास जी महाराज व स्वामी ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी ने भी नौजवानों को गीता व रामायण के आदर्शों पर चलने की बात कही।

इस भव्य आयोजन के सूत्रधार गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज ने अपने वक्तव्य में कहा कि श्रीमद्भगवदगीता की प्राकट्य स्थली में 5159 वीं गीता जयन्ती के अवसर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में श्री राम कथा मानस गीता का दिव्य आयोजन भगवान् श्री कृष्ण की पावन धरा पर श्री राम के साक्षात् आगमन का पर्याय है। कुरुक्षेत्र की दिव्य धरा पर भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन का मोह भंग करने एवं कर्म करने का सन्देश दिया था। श्री रामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवदगीता एक ही हैं। जहाँ एक ओर मानस में श्रीराम का जीवन, गीता में प्रशस्त कर्म मार्ग का अनुसरण है वहीं दूसरी ओर पाण्डवों के जीवन में श्री राम की मर्यादाओं को स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है। वास्तविकता में श्रीराम में गीता है एवं गीता में श्री राम है। उन्होंने मुरारी बापू जी के विषय में बात करते हुए कि उनके रोम - रोम में मानस है। उनके अंतस्थ भाव शब्दों के रूप में प्रकट हाते हैं एवं श्रोताओं को प्रभावित करते हैं।

मुरारी बापू जी ने अपनी दिव्य वाणी से अलौकिक प्रवचनों के माध्यम से कृष्ण की दैव्य व सैव्य भूमि पर आने का अवसर प्राप्त होने पर अपार प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर कुरुक्षेत्र का हृदय कहे जाने वाले तीर्थ ब्रह्मसरोवर के तट पर श्री राम कथा मानस गीता का आयोजन कथा के महत्व को और भी अधिक बढ़ा देता है। भगवान् श्रीकृष्ण विश्वास व विश्वरूप है एवं उनकी स्वयं की वाणी से अवतरित हुआ श्रीमद्भगवदगीता रूपी महामंत्र वैश्विक सदग्रन्थ है। भारत की दिव्य धरा पर न केवल श्रीमद्भगवद गीता का उद्भव हुआ बल्कि गुरु गीता, अध्यात्म गीता, आदि गीता, अनु गीता एवं उद्धव गीता भी स्वयं भगवान् की वाणी है और गीता के ही रूप है जो भारतीय सनातन परम्परा के विलक्षण प्रतिरूप हैं। मानस स्वयं गीता ही नहीं बल्कि भगवद् गीता है। मानस गीता अनुसुईया गीता, भुसुंडी गीता, धर्मरथ गीता, लक्ष्मण गीता व राम गीता इत्यादि का समूह है। जहाँ एक ओर श्रीमद्भगवद गीता का मूल केन्द्र श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद है वहीं दूसरी ओर श्री रामचरितमानस का मूल केन्द्र श्रीराम-रामानुज (लक्ष्मण) संवाद है। इस महाग्रन्थ का आरम्भ संशय, संदेह एवं मोह से होता है एवं मध्य में समाधान है और अन्त में शरणागति है। सभी मनुष्यों के जीवन में दुख, पीड़ा, समस्या आदि के रूप में विषाद है। परन्तु, श्रीमद्भगवदगीता हमें प्रेरणा देती है कि विषाद में विवाद नहीं बल्कि संवाद करें। यह संवाद तब तक जारी रखें जब तक विषाद प्रसाद में परिवर्तित न हो जाए। भगवान् श्री कृष्ण जगद्गुरू एवं त्रिभुवनगुरू हैं। जीवन रूपी महाभारत में प्रत्येक व्यक्ति अर्जुन के किरदार में है। परन्तु जिस अर्जुन के ऊपर त्रिभुवनगुरू की छाया है एवं आधार में जगद्गुरू हैं उस अर्जुन का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। हमें अर्जुन बनने का अभ्यास करना है। उन्होंने संकेत किया कि श्रीमद्भगवदगीता में अर्जुन को निमित्त बनाकर संदेश समूची मानव जाति को दिया गया है। बापू ने भारतीय परम्परा की विलक्षणता को इंगित करते हुए हुए कहा कि परम्पराएं पवित्र एवं प्रवाही होनी चाहिए। हिन्दू सनातन परम्परा में पंचदेवों की उपासना का अत्याधिक महत्त्व है। भगवान् श्री गणेश विवेक प्रधान हैं तो सूर्य देवता प्रकाश में जीवन जीने का संकल्प प्रतीक हैं। भगवान् विष्णु की उपासना से विशाल हृदय एवं सद्विचारों की कामना की जाती है। भगवान् शिव विश्व कल्याण के स्वरूप हैं एवं माँ दुर्गा स्वयं श्रद्धा व आसक्ति की प्रतीक है। तुलसीदास ने श्लोकों को लोक तक पहुँचाने के लिए श्री रामचरितमानस की रचना की। श्री रामायण जी की आरती के बाद प्रथम दिवस का समापन हुआ।

क्रमशः

चाहे कृष्ण कहो चाहे राम

19 नवम्बर 2022 से गीता ज्ञान संस्थानम् कुरूक्षेत्र में ***गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी*** के सानिध्य में मोरारी बापू जी की कथा का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "मानस गीता"। विषय आकर्षक था, मन भी बहुत था लेकिन मैं इतना सौभाग्यशाली न हो सका कि कथा में भौतिक रूप से उपस्थित हो सकता। मन में बार-बार आता कि कितना आनन्द आयेगा कि एक व्यास पीठ पर गीता मनीषी और एक पीठ पर रामायण मनीषी। मन इस विषय को सोच कर ही आनन्दित और आन्दोलित ही नहीं उद्वेलित भी होने लगता या यूँ कहें कि हिलोरें मारने लगता। मेरे मन की मन में ही रह गई क्योंकि मेरे मन की कोई जान न सका और जो कुछ-कुछ जान गया वो मान न सका। खैर विषय हाथ लगा तो सोचा अपनी तुच्छ सी बुद्धि अनुरूप अपने विचार साँझा करूँ।

जब राम ही कृष्ण और कृष्ण ही राम हैं, तब अन्तर बताना उचित होगा या समानता बताना। भारतीय जन मानस के परम आदर्श राम भी हैं और कृष्ण भी। ये दोनों भारतीय इतिहास, संस्कृति और धर्म परम्परा के ऐसे प्रज्ञा पुरुष हैं जिनसे हर देश और हर काल का व्यक्ति प्रेरणा लेता है-मर्यादा की भी और असीमता की भी। जीवन हो राम की मर्यादा जैसा लेकिन धर्म और न्याय की रक्षार्थ कृष्ण होना ही होता है। मानव मन भेद में जीता है, द्वन्द्व में जीता है! उलझना और उलझाये रखना उसका स्वभाव है! कहते हैं कि भगवान राम 12 और कृष्ण 16 कलाओं में दक्ष थे। श्रीकृष्ण में जो अतिरिक्त कलाएं थीं वह उस युग के मान से जरूरी थी। वर्ना गीता के दसवें अध्याय के इकत्तीसवें श्लोक में कृष्ण यह क्यों कहते-

"पवनःपवतामस्मि, रामः शस्त्रभृतामहम्"

अर्थात, मैं पावनकर्ता में पवन और शस्त्रधारियों में राम हूँ। भगवान राम का जीवन मर्यादाओं को कभी तोड़ता नहीं हैं, जबकि ऐसा कहा और समझा जाता है कि कृष्ण समय आने पर इसका अनुसरण नहीं करते हैं। समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए मर्यादा जरूरी है। इसीलिए प्रभु श्रीराम को पुरुषों में उत्तम कहा गया है। राम का जीवन एक आदर्श है तो श्रीकृष्ण का जीवन एक लीला है, एक उत्सव है, एक रहस्य है। आवश्यकता है प्रत्येक लीला के पीछे का रहस्य जानने की। यदि हम ऐसा कर पायें तो कृष्ण भी पूर्णरूप से मर्यादित प्रतीत होंगे। पुत्र के रूप में वनवास, भाई के रूप में पादुका त्याग और पति के रूप में सीता-वियोग। राम के दु:खों का न छोर, न ठोर लेकिन फिर भी वह मर्यादा को नहीं त्यागते हैं। सत्य के पथ पर अटल रहते हैं। राम अपने हर रूप में धर्मार्थ किसी न किसी सुख की बलि देते जाते हैं। वही शस्त्रधारी राम युद्ध-क्षेत्र में हर खोया सुख और पूर्ण सम्मान जीतने में समर्थ हैं। कृष्ण बेहद राजनैतिक अवतार है वो कभी जरासंध के भय से युद्ध छोड़कर भाग जाते हैं और रणछोड़ कहलाते हैं। अर्थात् वे परिस्थिति खराब होने पर मैदान को छोड़ना भी बुरा नहीं मानते। वे तरह समय परिस्थितियों के अनुसार ही अपना कार्य करते हैं यही एक राजनेता की सबसे बड़ी पहचान होती है। दूसरी ओर राम कोई राजनेता नहीं है। इसलिए उनके लिए समाज की मर्यादा और धर्म सम्मत आचरण ही सर्वोपरि है। मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन लक्ष्य एक ही है और वह है:-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

—गीता 4/7-8

मै प्रकट होता हूँ, मैं आता हूँ, जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब मैं आता हूँ, जब-जब अधर्म बढता है तब-तब मैं आता हूँ, सज्जन लोगों की रक्षा के लिए मै आता हूँ, दुष्टों के विनाश करने के लिए मैं आता हूँ, धर्म की स्थापना के लिए में आता हूँ और युग-युग में जन्म लेता हूँ। भगवान राम का जीवन ही '**गीता**' है या कहें कि धर्म सम्मत है जबकि कृष्ण

का जीवन हमें शिक्षा देता है कि धर्म रक्षार्थ कई बार धर्म विरुद्ध आचरण भी करना होता है। दरअसल राम अपने जीवन दर्शन और व्यवहार में लौकिक मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते जबकि भगवान् कृष्ण के जीवन दर्शन और व्यवहार के बहुआयामी पक्ष हैं। राम की जीवन शैली आपको जीवन में बाधाओं से उबरने का मार्ग प्रशस्त करती है वहीं दूसरी ओर कृष्ण के जीवन से सुख-दु:ख को सम तुल्य मान कर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। कृष्ण अध्याय दो के 38वें श्लोक में स्वयं कहते हैं:-

सुखदु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥

—गीता 2/38

सुख-दु:ख को समान तुल्य समझकर अर्थात् (उनमें) रागद्वेष न करके तथा लाभ-हानि को और जय पराजय को समान समझकर उसके बाद तू युद्ध (यानि अपने कर्म) के लिए चेष्टा कर इस तरह युद्ध (कर्म) करता हुआ तू पाप को प्राप्त नहीं होगा। यह प्रासंगिक उपदेश है। राम का जीवन बचपन से ही वन में वनवासी, ऋषि, आदिवासियों के बीच ही रहकर धर्म-कर्म के कार्यों के केन्द्र में रहा। उन्होंने ऋषियों की रक्षार्थ असुरों का वध किया और वनवासियों को शिक्षित और संगठित किया। दूसरी ओर कृष्ण का सामना बचपन से ही राजाओं से होता रहा और वे राजनीति के केन्द्र में रहे। राम महलों में पैदा हुए, पले और बाद में वनवास किया। कृष्ण बाद में महलों में गए, पैदा जेल में, पले गोकुल में। बंदीगृह में जन्में कृष्ण को शैशव में ही दांव-पेंच की विभीकाओं से जूझना पड़ता है। राम ने तो तपसी, वनवासी और उदासी का जीवन जी कर ही धर्म की रक्षा प्रारम्भ की थी। यानि भिन्न-भिन्न काल, युग और समय की आवश्यकता अनुसार अपने चरित्र को ढाल कर लोगों के समक्ष हर हाल में जीने की कला का उदाहरण दोनो ने प्रस्तुत किया! भगवान श्रीकृष्ण और उनके 18 कुल के लोगों का कार्य गौ पालन था। श्रीकृष्ण ने इस क्षेत्र को व्यवस्थित कर इसका विस्तार किया यानि श्वेत क्रान्ति के जन्मदाता बने जबकि भगवान राम ने चौदह वर्षीय वनवास काल में वन भूमि में कृषि का विस्तार किया, झोंपड़ी या पर्णकुटी में रहना सिखाया और वनवासियों की भूख का समाधान किया यानि हरित क्रान्ति के जन्मदाता बने। राम की कर्मभूमि पूर्वी और दक्षिण भारत है जबकि कृष्ण की कर्मभूमि उत्तर और पश्चिमी भारत है। पूर्वी और दक्षिणी भारत का मुख्य भोजन चावल है जबकि उत्तर और पश्चिमी भारत में दुग्ध उत्पाद प्रमुख भोजन है। कृष्ण ने गौ पालन के माध्यम से नई अर्थव्यवस्था का विस्तार किया तो राम ने कृषि और वन की सम्पदा को अर्थव्यवस्था का आधार बनाया। आधार कोई भी हो वस्तुत: दोनों के मन में आर्थिक कल्याण की भावना ही रही। सर्वशक्तिमान हनुमान, अंगद, लक्ष्मण, सुग्रीव, जामवंत जैसे लोग राम के परम भक्त हैं। प्रभु श्रीराम की भक्ति को स्वयं शिव भी करते हैं। दूसरी ओर भगवान श्रीकृष्ण को भगवान समझने के लिए अर्जुन और बलराम को भी वक्त ला तो दूसरे की बात करना व्यर्थ है। श्रीकृष्ण तो अपने भक्तों के भक्त थे। भक्ति के वे सारे मार्ग जो दूसरी ओर जाते हैं वे सभी घूमकर श्रीराम की ओर ही आते हैं। श्रीकृष्ण का सहयोग भी भगवान् हनुमान ने दिया था, क्योंकि श्रीकृष्ण राम ही तो हैं। इसीलिए महाभारत के युद्ध में हनुमान उसी रथ की ध्वजा बने जिसके सारथी स्वयं भगवान कृष्ण थे! इसका वर्णन प्रथम अध्याय के 20वें श्लोक में मिलता है:-

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वज:।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डव:।
हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते॥

—गीता 1/20

उस समय हनुमान के चिन्ह की ध्वजा लगे रथ पर आसीन पाण्डु पुत्र अर्जुन अपना धनुष उठा कर बाण चलाने के लिए उद्यत दिखाई दिया। हे राजन्! आपके पुत्रों को अपने विरूद्ध व्यूह रचना में खड़े देख कर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से यह वचन कहे। राम अपने मित्रों को बिना मांगे ही उनकी वांछित वस्तु दे देते हैं जैसे कि सुग्रीव और विभीषण को उन्होंने बिना मांगे ही क्रमश: बाली और रावण का राज्य प्रदान कर दिया। ऐसे ही श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा को वैभव प्रदान किया और लोक कल्याण के लिए कालिया मर्दन किया और गोवर्धन पर्वत को उठाया। भगवान राम की युद्ध नीति और श्रीकृष्ण की युद्ध नीति में अन्तर हो सकता है। हम कह सकते हैं कि राम ने अपने सम्मान

की लड़ाई लड़ी; जबकि श्रीकृष्ण की लड़ाई अपने लिए नहीं बल्कि धर्म रक्षार्थ थी। भगवान् राम ने रावण को मारने के लिए कई तरह की कठिनाइयों का सामना किया। सेना के गठन और समुद्र पार करने से लेकर महाशक्तिशाली रावण का वध करने तक कई घटनाक्रमों का सामना करना पड़ा, लेकिन श्रीकृष्ण के पास खुद की सेना थी जिसे उन्होंने कौरव पक्ष को दे दी थी और खुद पाण्डवों की ओर से बिना अस्त्र शस्त्र उठाये लड़े थे। भगवान राम को रावण और उसके साथियों जैसे मारीच इत्यादि के छल और उसकी मायावी शक्तियों का सामना करना पड़ा लेकिन भगवान श्रीकृष्ण को छल करने वालों के साथ छल का ही सहारा लेना पड़ा। भगवान राम ने एक-एक करके वन में और अन्य जगहों के पापी, असुरों का समय समय पर वध दिया लेकिन श्रीकृष्ण ने सभी को एक जगह एकत्रित करके निपटा दिया। एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण संहारे। दोनों दीन के दु:ख हरत हैं, दोनों बल के धाम।

भगवान राम का चरित्र सर्वथा अनुकरणीय है। भगवान श्रीकृष्ण का चरित्र चिन्तनीय है मगर दोनों वन्दनीय हैं राम का जन्म त्रेतायुग में चैत्र शुक्ल नवमी को दिन के ठीक 12 बजे हुआ था, जबकि श्रीकृष्ण का जन्म द्वापर युग में भादों के श्रीकृष्ण पक्ष अष्टमी को रात्रि के बारह बजे हुआ। जहाँ राम के जन्म के समय चारों ओर उजाला ही उजाला है वहीं श्रीकृष्ण के जन्म के समय घटाटोप अन्धेरा है। राम का जन्म महल के अन्दर हुआ था और श्रीकृष्ण का जन्म जेल के अन्दर हुआ था। राम श्वेत वर्ण के थे तो श्रीकृष्ण श्याम वर्ण के थे लेकिन तात्त्विक दृष्टि से दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं! यह हम पर निर्भर करता है कि हम सिक्के के एक पहलू को देख रहे हैं या पूरा सिक्का! **ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता: (12-4)** ' की बात करती है तो रामायण ' **परहित बसा जिसके मन माही, तैकू इस जग में कछू दुर्लभ नाहीं** ' की बात करती है। माखन ब्रज में एक चुरावे, एक बेर भीलनी के खावे। प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के एक हैं काम॥ जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।

द्वारा- डॉ0 मारकन्डे आहूजा
पूर्व कुलपति

श्री कृष्ण कृपा

राष्ट्र गौरव की आदर्श पहल

भगवत् गीता की दिव्यता अपना प्रभाव स्वयं प्रगट करती-करवाते हुए धीरे-धीरे समूचे विश्व में अपना प्रभाव दिखा रही है। इंगलैण्ड की संसद के दोनों सदनों में भगवत् गीता का सम्मान है सब का गौरव था ही, अब इंगलैण्ड के नव निर्वाचित प्रधान मंत्री श्री ऋषि सुनक जी का गीता जी हाथ में लेकर शपथ ग्रहण करना तथा गर्व से कहना कि मैं नियमित गीता पढ़ता हूँ, जीओ गीता एवं प्रत्येक गीता प्रेमी को उल्लासित करने वाला भाव।

अभी-अभी गुजरात में नये मंत्री मण्डल का गठन, मुख्य मंत्री भूपेन्द्र पटेल एवं समस्त मन्त्रियों का भगवद् गीता हाथ में लेकर शपथ ग्रहण करना राष्ट्र गौरव, परम्परा सम्मान की एक अप्रतिम-ऐतिहासिक पहल। राष्ट्र स्वाभिमान के इस दिव्य अध्याय के आदर्श प्रारम्भ हेतु भारत के प्रधानमंत्री, वहाँ के मुख्यमंत्री, सभी मन्त्रियों को हार्दिक शुभकामनायें।

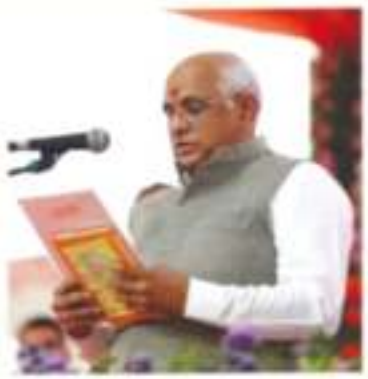

आओ गीता पढ़ें-पढ़ायें,
आप जगें औरों का जगायें
भारत माता का मान बढ़ाये।

- गीता मनीषी

ज्ञान साधना

-गीता मनीषी
स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

गतांक से आगे -

तपोबल ही वास्तविक बल है

शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक- ये चार शक्तियाँ स्वभावत: सबके पास हैं, यद्यपि आत्मिक शक्ति की पहचान कोई विरला ही कर पाता है। वास्तविक बलवान या शक्ति उत्पन्न वहीं होती है जिसने आत्मिक शक्ति को पहचान लिया है। वस्तुत: वह समूचे विश्व का ही नहीं, त्रिलोकी का सम्राट है। उसे किसी से किसी प्रकार का कोई भय नहीं, वह सर्वत्र निर्भय, निश्चिन्त एवं निराकांक्षी होकर विचरता है। आत्मबल के समान कोई अन्य बल नहीं। यदि आप आत्मशक्ति से सम्पन्न हैं तो शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक बल स्वत: आपमें आ जाएगें और सब प्रकार से आप अपने को अभय आनन्द की स्थिति में पाएंगे। शास्त्रों में ऐसी अनेकानेक घटनाएँ उपलब्ध हैं, जहाँ स्पष्ट वर्णन मिलता है कि ऋषियों के आत्मबल के समक्ष बड़े-बड़े प्रतापी-बलवान चक्रवर्ती सम्राटों को भी अभिमान रहित होकर नतमस्तक होना पड़ा। उनके तपोबल के सामने उन्हें भी अपनी शक्ति-वैभव सब तुच्छ दिखाई दिए। महर्षि विश्वामित्र जी और ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी की घटना इस सम्बन्ध में विशेष रूप से मननीय है। वशिष्ठ जी के तेज-तप को देखकर राजा विश्वामित्र को कहना पड़ा-धिक्कार है क्षत्रिय बल को; बल तो वास्तव में तपोबल अथवा आत्मबल ही है- **चिम्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।**

पहचानिए अपनी अपूर्व शक्ति को

इस आत्मबल से सम्पन्न होना वास्तव में मानव की स्थिति है। इससे अपने को वंचित रखना दुर्भाग्यपूर्ण है। इस स्थिति को पहचानने तथा उसमें अपने को स्थित करने में ही वस्तुत: पुरूष का पुरूषत्व है जिसके अभाव में मानव पशुत्व की श्रेणी में आकर भिक्षुक बन गया है। क्या असीम शक्ति से सम्पन्न होते हुए भी आप दीनता का जीवन जीना चाहेंगे ? यदि नहीं तो पहचानिए अपनी अपूर्व शक्ति को। यहाँ स्मरण रखें कि यह पहचान सम्भव है- केवल ध्यान के माध्यम से ही। ध्यान के द्वारा ही आप अपनी उस खोई हुई अतुल्य शक्ति, उस अकथनीय बल में अपने को स्थित कर सकते हैं; तदतिरिक्त कोई अन्य चारा नहीं। अतएव ध्यान आवश्यक ही नहीं नितान्त आनिवार्य है इस दृष्टि से कि जीवन में आप भाँति-भाँति से दीनता एवं हीनता का ही शिकार न होकर चिन्ताओं और समस्याओं के हिंडोले में ही न झूलते हुए निश्चल, निश्चिंत तथा निर्भय बने रह सकें। मानव जीवन का यही आदर्श है। इसे कहीं बाहर से नहीं लाना- यह आपकी सहज स्थिति है, जिसके लिए आवश्यकता है ध्यान की।

क्रमश:

जिज्ञासा-समाधान

म. मं. गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

गीता जी से सम्बन्धित भक्तजनों की कुछ जिज्ञासायें पूज्य महाराज श्री द्वारा समाधान।

जिज्ञासा:- महाराज श्री! समय का प्रवाह बहुत तेज है। दिन, सप्ताह, महीना, वर्ष कब कैसे निकलते जाते हैं, पता ही नहीं चलता। कभी कभी मन में निराशा सी भी होने लगती है कि संसार की इन्ही उलझनों में ही जीवन तो नहीं निकल जायेगा-क्या करें?

समाधान:- समय को तो निकलना है, निकलेगा। न तो समय को रोका जा सकता है, न इसकी गति को ही कम किया जा सकता है। बीते समय को लौटाया जा सके, ऐसा भी सम्भव नहीं। यह तो सत्य है ही कि एक-एक साल करते जीवन निकल जाता है; लेकिन इसे अपनी उलझन न बनायें, न ही निराशा में अपने आपको गिराये, यह समाधन नहीं है; समस्या और जटिल हो जायेगी।

समाधान है समय के साथ न्याय करना। मनुष्य जीवन का दुर्लभ अवसर मिला है, इसे समझें। यह ठीक है कि प्रारब्ध साथ है; अनुकूलता, प्रतिकूलता भी प्रारब्ध से जुड़ी होती है। उस प्रारब्ध को भी भगवद्भाव के साथ सहजता से हँसकर पूरा करने का प्रयास करो। अनुकूलता भगवान् की कृपा तथा प्रतिकूलता उनकी इच्छा मानो। भगवत् गीता को अपने प्रत्येक व्यवहार का साथी बनाओ। विश्वास करो-गीता पाठ, गीता चिन्तन आपके जीवन में कभी भी निराशा नहीं आने देगा तथा न ही यह विचार भी कि जीवन उलझनों में ही व्यतीत हो रहा है। सच तो यह है कि ऐसे भावों में जीने से समय व्यतीत नहीं होगा अपितु जीवन का आनन्द बन जायेगा। '**जीओ गीता**' का इसीलिये यह आह्वान है-

जीओ गीता के संग में,
जीओ जीवन आनन्द में।

जिज्ञासा:- वर्ष 2023 आ रहा है। आपसे प्राय: सुनते हैं कि हमारा नया वर्ष यह नहीं। यदि ऐसा है तो इसे महत्त्व ही क्यों दिया जाता है। श्री कृष्ण कृपा परिवार की ओर से भी 31 दिसम्बर की रात को भजन संध्याओं का आयोजन होता है-इसकी क्या आवश्यकता है?

समाधान:- यह बात लगभग हर स्थान पर स्पष्ट की जाती है कि हमारा अपना भारतीय नववर्ष नव सम्वत् ही होता है, जिसके साथ अनेक सार्थक तर्क, विचार एवं विशुद्ध मांगलिकता जुड़ी होती है, जिसकी चर्चा का यह प्रश्न और यहाँ विषय भी नहीं लेकिन पाश्चात्य परम्परा के इस नव वर्ष के साथ न तो कोई शुभ मुहूर्त्त ही होता है। मौसम, ऋतु, वातावरण स्थिति हर पक्ष को आप देखें, विचारें। यह भी कि 31 दिसम्बर की रात्रि में विश्व भर में अधिकांशत: कैसा हुड़दंग का वातावरण होता है। कितनी अभद्र सी स्थितियों में, नशे आदि विकृतियों के साथ प्रवेश किया जाता है।

श्री कृष्ण कृपा परिवार की ओर से यद्यपि

यह स्पष्ट किया जाता है कि अगर मानते ही हो इसे नव वर्ष, कम से कम प्रवेश तो अच्छे ढंग से करो। अमांगलिक ढंग से प्रवेश करके नव वर्ष की मंगल कामनायें देना-कैसा विरोधाभास है। इससे बचें और भगवद्भाव-भगवन्नाम के साथ प्रवेश करें। इससे हज़ारों लोगों में स्थान-स्थान पर बहुत परिवर्तन भी आया है। जो पहले कहीं क्लब, होटल या खुले चौराहों में नशों के हुड़दंग में देखे जाते थे, ऐसे बहुत से लोग इन भजन संध्याओं में बैठे देखे जाते हैं। अब तो अनेक और संस्थायें भी ऐसा करने लगी हैं। वैसे भी सीधी बात-भजन किसी भी निमित्त से हो, अच्छा ही है। भजन का प्रभाव तो स्वस्थ सकारात्मक है भी और रहेगा भी। इसलिये अपनी सोच को भी इस विषय में सही सकारात्मक ही रखें।

जिज्ञासा:- वर्ष 2023 अच्छा निकले, इस हेतु से हम गृहस्थियों को क्या करना चाहिये ?

समाधान:- वैसे तो पूरा जीवन ही अच्छा निकले, इस विचार के साथ जीवन जीने का निश्चय करना चाहिये; लेकिन कम से कम अभी आपने वर्ष 2023 की ही बात की है तो भी अच्छा है; कुछ बातें निश्चित कर लेनी चाहिये। यह एक अच्छी सोच ही कही जायेगी। इसे नया वर्ष माने अथवा नहीं माने-इसे अलग रखकर यह विचार तो सब बना ही सकते हैं कि कुछ अच्छे संकल्पों-नियमों के साथ प्रारम्भ करें ताकि पूरा वर्ष उन नियमों के ट्रैक पर अच्छे से निकले।

- सब से पहली बात तो यह कि कुछ समय नियमित भगवान् का भजन ध्यान, नाम-जाप। यह नियम यदि अभी तक भी पक्का नहीं है तो अब कर लेना चाहिये- सबसे पहला काम प्रभु का नाम।
- गीता पाठ को भी अवश्य अपना दृढ़ नियम बनाओ, गीता पाठ जीवन की ऊर्जा, बल, शक्ति, शान्ति और आनन्द है; बिना चुके ऐसा करने का वर्ष प्रारम्भ से निश्चित कर लें। यदि पहले से नियम है तो उसे और बढ़ा लें; इस वर्ष एक बार 'गीता प्रेरणा' अध्ययन का भी मन बनायें। थोड़ा-थोड़ा रोज पढ़ें! आवश्यक नहीं कि इसी वर्ष ही पूरी हो। समझकर पढ़ने का अभ्यास बनायें।
- पारिवारिक सद्भावनायें बनी रहें, हर कोई अपनी ओर से प्रयास करे। दूसरों को नहीं, अपने को देखो। संयम, सन्तोष, सहनशीलता, धैर्य को अपने सच्चे आभूषण बनाओ। गृहस्थाश्रम की सबसे बड़ी पूँजी प्रेम सद्भाव है, ध्यान रखो।
- बच्चों को कुछ समय अवश्य दो; उन्हें **'जीओ गीता'** द्वारा निर्धारित नौ श्लोक अथवा भगवत् स्तुति के 10 श्लोक अथवा वैश्विक गीता पाठ वाले 18 श्लोक पाठ करने एवं याद करने की सत्प्रेरणा दो। बच्चे संस्कारवान् बने- इसी में बच्चों के साथ-साथ आपका और राष्ट्र का भविष्य टिका है।

जिज्ञासा:- जीओ गीता की वर्ष 2023 को लेकर क्या विशेष प्रेरणायें रहेंगी तथा कुरुक्षेत्र में निर्माणाधीन **'गीता ज्ञान संस्थानम्'** इस वर्ष किस लक्ष्य के साथ आगे बढ़ेगा ?

समाधान:- यह अनेक बार स्पष्ट किया जा चुका है कि **'जीओ गीता'** अपने आप में एक व्यावहारिक प्रेरणा है- गीता के साथ जीओ; गीता के अनुसार जीओ। यह प्रेरणा केवल अध्यात्म पथ के साधकों, जिज्ञासुओं तक के लिये ही नहीं, हर क्षेत्र के लिये है। बालक हों या वृद्ध, नर-नारी, वानप्रस्थी-ब्रह्मचारी, संन्यासी- गृहस्थी, शिक्षा- चिकित्सा, न्याय-व्यवसाय, यहाँ तक कि जेल बन्दी, सीमा पर खड़े सैनिक-गीता सबके लिये है और जीओ गीता का समर्पित संकल्पित प्रयास है कि गीता सब तक पहुँचे भी, सब गीता जी की व्यावहारिकता को समझें, सब उससे लाभान्वित हों और सब उसका लाभ अपने-अपने कार्यक्षेत्र के माध्यम से राष्ट्र गौरव के रूप में सब को दें। अनेक क्षेत्रों में ये प्रयास प्रारम्भ हुए हैं; 2019 में और व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ें, ऐसा प्रयास जीओ गीता का है और आगे भी रहेगा। आप सब भी इस प्रयास में सहभागी, सद्भागी बनें- ऐसा सबके लिये खुला आह्वान् भी है।

जहाँ तक **'गीता ज्ञान संस्थानम्'** की बात है, यह एक बड़ा केन्द्र है; कार्य जितना प्रभु चलवा रहे हैं, चल रहा है; आगे जैसी-जैसी उनकी कृपा चलती रहेगी, आगे बढ़ता रहेगा। सत्य यही है कि संकल्प उनका है, उन्हें ही पूरा करवाना है। एक बार कुरुक्षेत्र आकर देखें और अच्छा रहेगा।

जय श्री कृष्ण! जय भगवद्गीते!!

गौमाता नन्दनी

- धर्मनारायण शर्मा

गऊ माता सरल एवं बड़ी उदार दिखती हैं, परन्तु वे कभी कुपित होती हैं तो कैसा करतब दिखाती हैं, यह इस प्रसंग से सिद्ध हो जाता है। महाभारत के प्रथम खण्ड में वशिष्ठ विश्वामित्र के युद्ध का प्रसंग आता है। विश्वामित्र आखेट के लिये मध्यप्रदेश गये थे। शिकार का पीछा करते हुए काफी समय बीत गया, वे प्यास से पीड़ित हो गये, महर्षि वशिष्ठ के आश्रम पर आये। महर्षि वशिष्ठ ने उनका सत्कार करते हुए आतिथ्य ग्रहण करने के लिए आमन्त्रित किया। विश्वामित्र का सैन्य बल भी यहीं पहुँच गया।

महात्मा वशिष्ठ जी के यहाँ एक कामधेनु थी, जो अमुख-अमुख मनोरथ को पूर्ण करो यह कहने पर सदा उन-उन कामनाओं को पूर्ण कर दिया करती थी। विश्वामित्र जी और उनकी सम्पूर्ण सेना को उनकी रूची के अनुसार भोजन कराया। यह देखकर विश्वामित्र जी बड़े चकित हुए। विश्वामित्र जी ने देखा कि उस कामधेनु का मस्तक, ग्रीवा, जाँघें, बलकम्बल पूँछ और थन ये छः अंग बड़े एवं विस्तृत थे। उसके पार्श्व भाग तथा ऊरू बड़े सुन्दर थे। वह पाँच पृथुल अंगों से सुशोभित थी। उसकी आँखें मेढ़क जैसी थी, चारों थन मोटे-मोटे और फैले हुए थे। वह सर्वथा प्रशंसा के योग्य थी। सुन्दर पूँछ, नुकीले कान और मनोहर सींगों के कारण वह बड़ी मनोरम जान पड़ती थी। उसके सिर और गर्दन विस्तृत एवं पुष्ट थे। उसका नाम नन्दनी था। उसे देखकर विस्मित हुए गाधिनन्दन विश्वामित्र ने उसका अभिनन्दन किया।

विश्वामित्र ने कहा ब्राह्मण आप चाहे मेरा राज्य ले लीजिए, परन्तु यह नन्दनी मुझे दे दीजिए। इस पर वशिष्ठ जी ने कहा इस गाय के द्वारा यज्ञ का हविश मुझे मिलता है इसलिए तुम्हारा राज्य लेकर मैं इसे नहीं दे सकता। विश्वामित्र ने कहा ब्राह्मण दुर्बल एवं शान्त होते हैं फिर क्या बात है कि एक अर्बुछ गाय लेकर भी मेरा अभीष्ट पूरा नहीं कर रहे हैं। मैं क्षत्रीय हूँ, मैं अपना धर्म नहीं छोड़ूँगा और इसे बलपूर्वक ले जाऊँगा। मुझे धर्मतः अपना बाहुबल प्रकट करने का अधिकार है, इसलिए आपके देखते-देखते इसे हरकर ले जाऊँगा। वशिष्ठ जी ने कहा तुम्हारे पास सेना है, बल है, अब तुम्हारी जो इच्छा हो वो करो।

विश्वामित्र ने जबरन सफेद नन्दनी को मारते-पीटते खींचना आरम्भ किया, वह डकारती हुई वशिष्ठ के सामने आकर खड़ी हो गई। नन्दनी की अवस्था देखकर वशिष्ठ जी कहने लगे, ये विश्वामित्र तुम्हें जबरन ले जा रहे हैं कल्याणी! मैं एक क्षमाशील ब्राह्मण हूँ, मैं क्या कर सकता हूँ? नन्दनी मार पीट से उद्विग्न हो गई और वशिष्ठ जी की ओर देखकर कह रही थी कि आप क्यों मेरी उपेक्षा कर रहे हैं? नन्दनी क्षत्रीयों का बल तेज है और ब्राह्मण का बल क्षमा है, कल्याणी यदि तुम्हारी रूची हो तो तुम जा सकती हो। नन्दनी कह रही थी क्या आपने मुझे त्याग दिया, जो ऐसी बातें कर रहे हैं? यदि आपने मुझे त्यागा नहीं है तो यह मुझे बलपूर्वक नहीं ले जा सकते। वशिष्ठ जी ने कहा मैं तुम्हारा त्याग नहीं करता, तुम रह सको तो रहो, देखो तुम्हारे बछड़े को बलपूर्वक ले जा रहे हैं।

नन्दनी ने जब सुना कि वशिष्ठ जी ने उसे नहीं त्यागा है तो वह क्रोध में डकारने लगी। उसकी आँखें लाल हो गईं। वह दोपहर सूर्य की भाँति उद्भासित हो उठी। उसने अपनी पूँछ से बारम्बार अंगार की भारी वर्षा करते हुए पूँछ से ही पह्लवों की सृष्टि की, थनों से द्रविड़ों और शकों को उत्पन्न किया, योनि देश से यवनों और गोबर से बहुतेरे शबरों को जन्म दिया। कितने ही शबर उनके मूत्र से प्रकट हुए। उसके पार्श्वभाग से पौण्ड्र,

किरात, यवन, सिंहल, बर्बर और खसों की सृष्टि हुई। इसी प्रकार उस गाय ने फेन से चिबुक, पुलिन्द, चीन, हुण, केरल आदि बहुत प्रकार के म्लेच्छों की सृष्टि की।

उसके द्वारा रची गई नाना प्रकार की म्लेच्छ सेना शस्त्रों से युक्त थी तथा सभी ने कवच धारण कर रखा था। इन सैनिकों ने विश्वामित्र की सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। विश्वामित्र के एक-एक सैनिक को म्लेच्छ सेना के पाँच-पाँच, सात-सात योद्धाओं ने घेर रखा था। म्लेच्छ सैनिकों की मार से विश्वामित्र के सैनिकों के पाँव उखड़ गये, वे भाग खड़े हुए। इस प्रकार नन्दनी गाय ने उनकी सेना तीन योजन दूर भगा दी, वे सैनिक चीखते-चिल्लाते रहे परन्तु कोई संरक्षक नहीं मिला।

यह देखकर विश्वामित्र क्रोधित होकर बाणों की वर्षा करने लगे। विश्वामित्र के छोड़े गये भयंकर नाराच, क्षुर और भल्ल नामक बाणों का वशिष्ठ अपने ब्रह्मदण्ड से निवारण करने लगे। विश्वामित्र ने वशिष्ठ पर दिव्यास्त्रों का प्रयोग करना आरम्भ किया। उन्होंने आग्नेयास्त्र, वरूणास्त्र, याम्यास्त्र, वायव्यास्त्र का प्रयोग किया। ये सब शस्त्र अग्निवर्षा करते हुए वशिष्ठ पर प्रहार करने लगे, परन्तु महा तेजस्वी वशिष्ठ मुस्कुराते हुए ब्रह्मबल से प्रेरित हुए दण्ड से शस्त्रों को पीछे लौटाते रहे। फिर तो वे सभी शस्त्र भस्मीभूत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इस प्रकार उन दिव्यास्त्रों का निवारण करके वशिष्ठ जी ने विश्वामित्र से यह बात कही- गाधिनन्दन! अब तू परास्त हो चूका है। यदि तुझमें और भी उत्तम पराक्रम है तो मेरे ऊपर दिखा। मैं तेरे सामने डटकर खड़ा हूँ। वशिष्ठ जी द्वारा ललकारे जाने पर विश्वामित्र लज्जित होकर कुछ भी उत्तर नहीं दे सके।

दृष्ट्वा तन्महदार्य ब्रह्मतेजोभवे तदा ॥44॥

(महा. 174/44)

विश्वामित्रः क्षत्रभावान्निविण्णो वाक्यब्रवीत।
धिग् बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम् ॥45॥

(174/45 महा. चैत्ररथपर्व)

ब्रह्मतेज का यह अत्यन्त आश्चर्यजनक चमत्कार देखकर विश्वामित्र क्षत्रियत्व से खिन्न एवं उदासीन हो यह बात बोले- क्षत्रिय बल तो नाम मात्र का ही बल है, उसे धिक्कार है। ब्रह्मतेज जनित बल ही वास्तविक बल है। अन्त में विश्वामित्र ने राज्य का त्याग करके तपस्या का निश्चय किया।

आज भी हम जिस गोमाता को दुर्बल समझ रहे हैं वह माँ अत्यन्त शक्तिशाली है। नन्दनी में तेज था, परन्तु वह देख रही थी कि वशिष्ठ का रूख क्या है? जब वशिष्ठ ने कहा मेरा स्वभाव क्षमा का है, परन्तु मैं तुम्हारा त्याग नहीं कर रहा हूँ। जैसे ही नन्दनी को वशिष्ठ की मजबूरी व मंशा का पता लगा कि वे मुझे चाहते हैं वैसे ही नन्दनी ने अपना तेज प्रकट किया। उसने हजारों योद्धाओं को प्रकट किया और विश्वामित्र के सैनिकों को मार भगाया। यह हिन्दू समाज जो गाय को माता मानता है, परन्तु स्वार्थी बना माँ का दूध तो चाहता है लेकिन उसकी सेवा करने को तैयार नहीं है। उसने गऊमाता की उपेक्षा और मन से उसका त्याग कर रखा है। ऐसे अनेक तथाकथित गौभक्त बने लोग गऊशालाऐं चलाकर समाज से धन एकत्रित करते हैं, परन्तु गायों को भूखा मार रहे हैं। गौ हत्यारे तो खंजर से गऊ को काट कर मारते हैं, परन्तु तथाकथित गौभक्त उन्हें भूखा रखकर मार रहे हैं। हत्यारे दोनों प्रकार के हैं और जो दूध दुहकर छोड़ देते हैं वे भी कम पापी नहीं हैं।

जिस दिन गौमाता को हिन्दू सामज हृदय से स्वीकार करेगा उस दिन प्रत्येक गौमाता नन्दनी सा तेज प्रकट करेगी और दुष्टों का दलन कर देगी, परन्तु शर्त है आप उसे स्वीकारें, त्यागें नहीं।

आज भी हृदय से जो सेवा कर रहे हैं वे आर्थिक दृष्टि से खुशहाल हो रहे हैं। एक गौमाता भी आपके बच्चों का भरण पोषण करने में सक्षम है। आपको दूध, दही, घी, शुद्ध प्रदान करती हैं, ऐसी यह देवी माँ हमारी राष्ट्रमाता है। राष्ट्र गाय को स्वीकार करे तो भारत विश्व में चमत्कारित ढंग से अग्रगण्य बन जायेगा।

जय श्री गौमाता

श्री गीता जी को
सरलता से समझने-
समझाने के लिए
अवश्य पढ़ें
"गीता प्रेरणा"

(गीता जी की प्रासंगिक सरल व्याख्या)
सम्पर्क सूत्र :- 7027001892

स्नान, दान और तप का पर्व
मकर संक्रान्ति

- श्री अनिल सिद्धार्थ जी

मकर संक्रान्ति परिवर्तन का पर्व है। यह मूलत: हमारी उस संस्कृति की देन है, जिसमें काल की अवधारणा चक्र के रूप में की गई है। संक्रान्ति, परिवर्तन और परिवर्तन जीवन का प्रतीक है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, इसीलिए इससे भयभीत होने की जरूरत नहीं है। प्रकृति के पास ही इसका समाधान भी है। भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में सूर्य को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य की राशि बदलेगी। यह दो ऋतुओं के संधिकाल का परिचायक भी है। इसमें जाने वाले के प्रभाव में ह्रास होगा तो आने वाले के प्रभाव में अभ्युदय।

मकर संक्रान्ति से ही सूर्य के उत्तरायण होने से दिन का बढ़ना शुरू हो जायेगा। इससे हमें सूर्य की किरणों का प्रचुर लाभ मिलेगा सो सर्दी में सिहरी, सिमटी देह को नई ऊर्जा भी। संक्रान्ति की भी पूरे देश में अलग-अलग रीति है। पंजाब में लोहड़ी मनाई जाती है। इस बहाने सर्दी में आग जलाकर नाचने-गाने और गुड़, तिल, मूँगफली खाने का रिवाज है। महाराष्ट्र में तिल-गुड़ बाँटा जाता है। कहते हैं तिल-गुड़ लीजिए और मीठा-मीठा बोलिए। बंगाल में तिल मिलाकर 'तिलुआ' बनाते हैं, वहीं पोंगल यानी पाकोत्सव मनाया जाता है।

वस्तुत: सूर्य के उत्तरायण गमन से भगवान् विष्णु और राजा बलि की रोचक कथा भी जुड़ी हुई है। बलि के तीनों लोकों पर विजय से चिन्तित देवों ने भगवान् विष्णु से कोई उपाय करने को कहा। भगवान् विष्णु ने ब्राह्मण रूप में राजा बलि से तीन पग भूमि दान में माँग ली। दो पगों में पृथ्वी और स्वर्ग के बाद तीसरे पग के लिए जब कोई स्थान शेष नहीं बचा तो राजा बलि ने अपनी पीठ ही नपा दी। फिर भगवान् विष्णु ने उसे पाताल का राजा बनाकर भेज दिया और स्वर्ग का राज्य देवताओं को सौंप दिया। बलि ने भगवान् विष्णु से छ: माह द्वारपाल के रूप में रहने का अनुरोध किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। माना जाता है कि तभी से भगवान् विष्णु को छ: माह द्वारपाल के रूप में पाताल में ही रहना होता है। सूर्य के दक्षिणायन होने की यही कथा है। संक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण होता है।

संक्रान्ति किसी की विदाई तो किसी के आगमन का अवसर है। यह तप के माह माघ का प्रतिनिधित्व काल भी है। संक्रान्ति का महत्त्व सिर्फ भौगोलिक परिवर्तनों तथा सूर्य की किरणों के तेज और तेज होने का प्रमाण नहीं बल्कि यह हमारी समृद्ध, सांस्कृतिक परम्परा के पुर्नबलन का प्रतीक भी है। ग्रहों-उपग्रहों की गति में परिवर्तन से पूरी प्रकृति पर असर पड़ता है। लोगों के व्यवहार आदि में परिवर्तन सम्भव है। यह समय संयम के जरिए अपने भीतर दृढता पैदा करने का भी है ताकि प्रकृति का परिवर्तन हमें बहा न सके। हम प्रकृति को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार कर इस परिवर्तन को आत्मसात करें।

पूज्य महाराज श्री से सोशल मीडिया द्वारा जुड़ने हेतु :

Facebook, Instagram, Twitter, YouTube, Koo पर

gitamanishi

को फॉलो करें।

Whatsapp :- 9354626999

सकट चौथ

सकट चौथ की कहानी:- एक साहूकार और एक साहूकारनी थे। वह धर्म पुण्य को नहीं मानते थे। इसके कारण उनके बच्चा नहीं हुआ। एक दिन पड़ोसन सकट चौथ की कहानी सुन रही थी। तब साहूकारनी उसके पास जाकर बोली- तुम क्या कर रही हो? तब वह बोली आज चौथ का व्रत है इसलिए कहानी सुन रही हूँ तो साहूकारनी बोली कि चौथ का व्रत करने से क्या होता है? तब वह बोली कि अन्न, धन, सुहाग हो, बेटा हो। तब साहूकार की बहु बोली कि यदि मेरे गर्भ रह जाये तो सवा सेर तिलकुट करूँगी और चौथ का व्रत भी करूँगी। उसके गर्भ रह गया तो वह बोली तो वह बोली कि मेरे लड़का हो जाये तो मैं ढ़ाई सेर तिलकुट करूँगी। उसके लड़का भी हो गया तो वह बोली कि हे चौथ माता मेरे बेटे का विवाह हो जायेगा तो सवा पाँच सेर तिलकुट करूँगी।

जब बेटे का विवाह तय हो गया तो वह विवाह करने चले गए। तब चौथ बिन्दायक ने सोचा कि जब से इसके गर्भ रहा है तब से रोज तिलकुट बोलती है और अब तो बेटे का विवाह भी हो रहा है तब भी तिल का एक दाना भी नहीं दिया। अगर हम प्रपंच नहीं दिखायेंगे तो अपने को कलियुग में कोई भी नहीं मानेगा। हम इसके बेटे को फेरों में से ले लेंगे। जब उसने तीन फेरे लिए तो चौथ माता गरजती हुई आईं और उसको उठाकर पीपल पर बिठा दिया। हाहाकार मच गया और सब उसको ढूँढ़ने लगे परन्तु कहीं भी नहीं मिला।

लड़कियाँ गनगौर पूजने गाँव से बाहर दूब लेने जाती थीं। तब वह कहता- 'आ मेरी अर्द्धब्याही!' यह बात सुनकर वह लड़की सूखकर काँटा हो गई। तब लड़की की माँ बोली- मैं तुझे अच्छा खिलाती हूँ, अच्छा पहनाती हूँ फिर भी तू क्यों सूखती जा रही है? तो वह बोली कि जब मैं दूब लेने जाती हूँ तो एक पीपल में से एक आदमी बोलता है कि आ मेरी अर्द्धब्याही और उसने मेंहन्दी लगा रखी है, सेहरा बाँध रखा है तो उसकी माँ उठी और देखा कि वह तो उसका जमाई है। तब वह अपने जमाई से बोली कि यहाँ क्यों बैठा है? मेरी बेटी तो अर्द्धब्याही कर दी और अब क्या लेगा? तब वह बोला कि मेरी माँ ने चौथ माता का तिलकुट बोला था। उसने नहीं किया और चौथ माता नाराज हो गई और मेरे को यहाँ बिठा दिया। वह वहाँ गई और साहूकारनी से बोली कि तुमने सकट चौथ का कुछ बोला है क्या? तब साहूकारनी बोली- तिलकुट बोला था। फिर साहूकारनी बोली कि अगर मेरा बेटा आ जाये तो ढाई मन का तिलकुट करूँगी।

गणेश चौथ राजी हो गई और उसके बेटे को फेरों में लाकर बिठा दिया, बेटे का विवाह हो गया तब उन लोगों ने ढाई मन का तिलकुट कर दिया और बोली कि हे चौथ माना! तेरे आर्शीवाद से मेरे बेटे-बहु घर आए हैं जिससे मैं हमेशा तिलकुट करके व्रत करूँगी। सारे नगर में ढ़िढोरा पिटवा दिया कि सब कोई तिलकुट करके चौथ का व्रत करता।

पुत्रदा एकादशी

श्री कृष्ण बोले- हे राजन्! पौष शुक्ल एकादशी सब पापों को दूर करने वाली पुत्रदा एकादशी है। सिद्धि और कामना को पूर्ण करने वाले नारायण इसके देवता हैं। चर-अचर तीनों लोकों में इससे श्रेष्ठ और नहीं। भद्रावती नाम की पुरी थी। वहाँ सुकेतुमान नाम का राजा था। उसकी शैव्या नाम की रानी थी। वह राजा पुत्रहीन था। अपनी शैव्या रानी के साथ प्रतिदिन दु:खी रहता था। वे दोनों राजा रानी चिन्ता और शोक में मग्न रहते थे। पुत्र के बिना पित्रीश्वर, देवता और मनुष्य ऋण से नहीं छूटता। इसलिए मनुष्य को प्रयत्न करके पुत्र उत्पन्न करना चाहिए। जिनके घर में पुत्र है उनका इस लोक में यश होता है। परलोक में अधोगति होती है जिन पुण्यात्माओं को सैकड़ों जन्म का पुण्य होता है, उनके ही पुत्र और पौत्र होते हैं। इस प्रकार राजा दिन रात चिन्ता में मग्न रहता था फिर सुकेतुमान ने आत्महत्या का विचार किया परन्तु उसने परलोक में दुर्गति समझकर यह विचार छोड़ दिया। सन्तान के अभाव से अपने शरीर को दुर्बल देखकर अपनी बुद्धि से अपना हित सोचकर घोड़े पर बैठकर राजा घोर वन में चला गया। पुरोहित आदि किसी को यह ज्ञान नहीं हुआ। वन में इधर-उधर भ्रमता हुआ चिन्ता करने लगा कि मैंने ऐसा कौन सा बुरा काम किया। जिससे ऐसा दु:ख मिला। मैंने यज्ञ और पूजा से देवताओं को सन्तुष्ट किया। मिष्ठान, भोजन तथा दक्षिणा देकर ब्राह्मणों सन्तुष्ट किया। समयानुसार प्रजा का पुत्र की तरह पालन किया। यह सब करने पर भी मुझको ऐसा कठिन दु:ख क्यों मिला? इस प्रकार चिन्ता करता हुआ वन में चला गया। पुण्य के प्रभाव से कुमुदनी से सुशोभित मानसरोवर के समान एक सुन्दर सरोवर को देखा। ये सरोवर चकोर, चकवा और राजहंसों से शोभायमान था। उसमें मगर, मछलियाँ और जल के जानवर थे। ऐश्वर्यवान राजा ने सरोवर के पास बहुत से मुनियों के आश्रम देखे और अच्छा शुकुन होने लगे। राजा का दक्षिण नेत्र और दक्षिण हाथ फड़कने लगा। इन अंगों का फड़कना शुभ सूचक प्रतीत हुआ। सरोवर के किनारे मंत्रों का जाप करते हुए मुनियों को देखकर घोड़े से उतरकर राजा उनके सामने खड़ा हो गया। मुनियों को अलग-अलग प्रणाम किया। हाथ जोड़कर राजा ने सबके लिए दण्डवत् किया। राजा को बहुत हर्ष हुआ। वे मुनीवर भी प्रसन्न होकर बोले- हे राजन्! आपकी क्या इच्छा है? सो कहिये। राजा बोले- हे तपस्वियों आप कौन हैं और आपका क्या नाम है? मुनि बोले हम विश्व देवा हैं और स्नान करने के लिए यहाँ आए हैं। आज पुत्रदा नाम की एकादशी है। हे राजन! पौष शुक्ल एकादशी पुत्र की इच्छा करने वालों को पुत्र देती है। तब राजा बोला- पुत्र उत्पन्न करने के लिए मैंने भी बड़ा प्रयत्न किया है यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरे लिए सुन्दर पुत्र दीजिये।

तब मुनीश्वर बोले- हे राजन्! आज पुत्रदा नामक प्रसिद्ध एकादशी है। आज इस उत्तम व्रत को करिये। हमारे आर्शीवाद से और भगवान् की कृपा से आपको अवश्य ही पुत्र प्राप्त होगा। इस प्रकार उनकी आज्ञा से राजा ने पुत्रदा एकादशी का उत्तम व्रत किया। रानी की गर्भ स्थिति हो गई। व्रत के प्रभाव से समय पर तेजस्वी और पुण्यात्मा पुत्र पैदा हुआ।

तनाव रहित जीवन एवम्
सद्भावनापूर्ण वातावरण के लिए
जुड़ें गीता से
- जुड़ें 'जीओ गीता' से
सम्पर्क सूत्र :- 7027001890

कर्म ही है उपासना

- स्वामी विवेकानन्द जी

सर्वोत्तम मानव कर्म नहीं कर सकता, क्योंकि उसके लिए कोई बन्धनकारी तत्व नहीं रह जाता, न आसक्ति और न अज्ञान। कहा जाता है कि एक बार एक जहाज चुम्बक के पहाड़ के पास जा निकला, जिससे उसकी सारी कीलें और पेंच खिंच कर निकल गए और वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। अज्ञान की दशा में ही कर्म का संघर्ष रहता है क्योंकि हम सब वास्तव में नास्तिक हैं। ईश्वर में सच्चा विश्वास रखने वाले कर्म नहीं कर सकते।

हम सभी न्यूनाधिक मात्रा में नास्तिक हैं। हम ना तो ईश्वर को देखते हैं और न उस पर विश्वास करते हैं। हमारे लिए वह 'ई-श्व-र' अक्षरों का समूह मात्र या शब्द मात्र है, इससे अधिक कुछ नहीं। हमारे जीवन में कुछ क्षण ऐसे आते हैं, जब हम ईश्वर की समीपता अनुभव करने लगते हैं, पर पुनः हम नीचे गिर जाते हैं। जब तुमने उसे देख लिया, तब संघर्ष किसके लिए रहेगा? भगवान् की सेवा सहायता के लिए। इसके बारे में हमारी भाषा में एक लोकोक्ति है कि 'हम विश्व के निर्माता को क्या निर्माण कला सिखायेंगे?' अतः सर्वोच्च कोटि के लोग कर्म नहीं करते। जब कभी फिर तुम ऐसी मुर्खतापूर्ण बातें सुनो कि हमें भगवान् की सेवा करनी चाहिए तो इस बात को याद रखना। ऐसे विचार ही मन में न लाओ, ये स्वार्थपूर्ण है।

तुम जो कुछ भी कार्य करते हो, उन सबका सम्बन्ध तुम्हीं से है और उसे तुम अपने ही भले के लिए करते हो। भगवान् किसी खंदक में नहीं गिर गए हैं जो उन्हें हमारी या तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है कि हम अस्पताल बनवाकर या इसी तरह के अन्य कार्य करके उनकी सहायता कर सकें। उन्हीं की आज्ञा से तुम कर्म कर पाते हो। इस संसार रूपी व्यायामशाला में भगवान् तुम्हें अपने व्यायाम द्वारा दृढ़ बनाने का अवसर देते हैं- इसलिए नहीं कि तुम उनकी सहायता करो, बल्कि इसलिए कि तुम स्वयं अपनी सहायता कर सको। क्या तुम सोचते हो कि तुम अपनी सहायता से एक चींटी तक को मरने से बचा सकते हो? ऐसी सोच ईश्वर के विपरित है। संसार को तुम्हारी तनिक भी आवयकता नहीं है। संसार चलता जाता है, तुम इस संसार सिन्धु में बिन्दु सदृश हो। बिना प्रभु की इच्छा के एक पत्ता तक नहीं हिल सकता, हवा भी नहीं बह सकती।

हम धन्य हैं, जो हमें यह सौभाग्य प्राप्त प्राप्त है कि हम उनके लिए कर्म करें, उनको सहायता देने के लिए नहीं। इस सहायता शब्द को मन से सदा लिए निकाल दो। तुम किसी की सहायता नहीं कर सकते। यह सोचना कि तुम सहायता कर सकते हो। धर्म नहीं है। तुम स्वयं उनकी इच्छा से यहाँ पर हो। क्या तुम्हारे कहने का यह तात्पर्य है कि तुम उनकी सहायता करते हो? नहीं, सहायता नहीं, तुम उनकी पूजा करते हो।

जब तुम किसी प्राणी को एक ग्रास खाने को देते हो, तब तुम ईश्वर पूजा करते हो। ईश्वर उस प्राणी में है- उस प्राणी के रूप में प्रकट हुआ है। वही सब कुछ है और सब में है। हमें उसकी आराधना करने की आज्ञा प्राप्त है।

समस्त विश्व के प्रति यही आस्था का भाव लेकर खड़े हो जाओ और तब तुम्हें पूर्ण अनासक्ति प्राप्त हो जायेगी। यही तुम्हारा कर्तव्य होना चाहिए। कर्म करना है यही उचित भाव है। कर्मयोग इसी रहस्य की शिक्षा देता है।

स्वतंत्रता संग्राम के महान् योद्धा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

- डॉ. शंकरदयाल शर्मा

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जीवन साहस और बलिदान की गाथा है। वर्ष 1921 से ही वे स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए और कई बार जेल गए। अंग्रेजी सरकार द्वारा बार-बार बन्दी बनाए जाने से जेल में उनका स्वास्थ्य तेजी से गिरने लगा। उपनिवेशी शासन हमेशा उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखता रहा और जाँच-पड़ताल करता रहा। इन सभी संकटों और कष्टों के बावजूद उन्होंने कभी साहस नहीं छोड़ा। उनके सभी कार्य अगाध देश प्रेम और गतिशीलता से ओत-प्रोत थे और वे सदा नई स्फूर्ति से कार्य करते थे। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया और वे सदा अटल और अडिग रहे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस हमारे स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा थे। 1921 में इंग्लैण्ड से लौटने के बाद वे देशबन्धु चित्तरंजन दास के नेतृत्व में स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल हो गए। 1922 में बंगाल में विनाशकारी बाढ़ के दौरान नेताजी ने लोगों के दु:खों और तकलीफों को दूर करने के लिए अपने नि:स्वार्थ कार्यों से अपनी संगठनात्मक शक्ति और अपने सेवा भाव का प्रमाण दिया। सन् 1924 में 27 वर्ष की आयु में ही उन्हें कलकत्ता नगर निगम का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया। उनके इस कार्यकाल में उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों से अंग्रेज सरकार नाराज हो गई। उन्हें गिरफ्तार कर रंगून भेज दिया गया। सन् 1930 में जब वे जेल में थे, तब कलकत्ता के मेयर चुने गए लेकिन अंग्रेज सरकार ने यह पक्का इरादा कर लिया था कि उन्हें जेल से बाहर न रहने दिया जाए, ताकि वे स्वतंत्रता संग्राम में भाग न ले सकें। 1932 में उन्हें दुबारा गिरफ्तार कर लिया गया और तत्काल देश से निकाला दे दिया गया।

इस देश निकाले से सुभाष चन्द्र बोस के जीवन में एक नए चरण की शुरूआत हुई। उन्होंने बाहर रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिए विदेश में जनमत तैयार करने और अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का बीड़ा उठाया। इसके बाद उन्होंने देश छोड़ दिया और मातृभूमि को स्वाधीन कराने के लिए आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का प्रमुख लक्ष्य था- भारत की स्वाधीनता। हालांकि वे अपनी आँखों से अपने स्वप्न को साकार होते नहीं देख पाए। किन्तु स्वतंत्रता आन्दोलन के इस महान युग के दौरान उनके द्वारा किया गया बलिदान ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जिस सीमा तक उन्होंने देश के युवा वर्ग को स्वतंत्रता संघर्ष की ओर आकर्षित किया और जिस ढंग से उन्होंने उन्हें प्रेरित किया उत्साहित किया वह सचमुच अद्‌भुत था। सन् 1944 में टोक्यो विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को व्याख्यान देते समय उन्होंने यह बताया था कि वे क्यों भारत की आजादी के लिए लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनके इस विश्वास का एकमात्र कारण यह सतत और दृढ़ धारणा है कि भारत के पास आन्तरिक शक्ति का भण्डार है तथा देश के प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग व एक साथ एक राष्ट्र के रूप में भी अपना अस्तित्व बनाए रखने व प्रगति करने का सामर्थ्य है।

नेताजी की भाषण कला और आत्मविश्वास उनके भाषणों में झलकता है। वे श्रोताओं को प्रभावित और मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनके सामने उनके लक्ष्य स्पष्ट थे और वे उन्हें प्राप्त करने के लिए अथक दृढ़ संकल्पित थे। यह उनके व्यक्तित्त्व की एक अद्वितीय विशेषता थी।

प्रभो! मम विनय सुन लीजिये

—गीता मनीषी स्वामी श्रीज्ञानानन्द जी महाराज

बिछुड़ के भगवन् आपसे असह्य दुःख सहने पड़े।
तप कर दुःखों की आँच में, अनुभव हुए इतने कड़े॥
अब तो पड़ा तव शरण में, दुःख दूर मेरे कीजिये।
अशरण-शरण हे दुःख हरण! प्रभो मम विनय सुन लीजिये॥

आवरण बुद्धि पर पड़े नहीं भेद इतना कर सका।
आनन्द निर्झर छोड़कर, अन्य कूप में रहा भटकता॥
अज्ञानता यह दूर कर अब ज्ञान ऐसा दीजिये।
न भूल ऐसी हो पुनः, प्रभो मम विनय सुन लीजिये॥

व्यर्थ के धन्धों में ही था जन्म मेरा जा रहा।
होश आया तब मुझे गुरुदेव ने जब यह कहा।।
विष त्याग भोले पंछी अब प्रभु प्रेम रस ही पीजिये।
प्याला प्रेम का अक्षय बने, प्रभो मम विनय सुन लीजिये॥

अब तो यही इच्छा है कि ऐसा जमे मन आप में।
निसदिन बढ़े अनुराग खोया ही रहूँ मैं जाप में।।
कहीं और मन जाये नहीं बस इतनी कृपा कीजिये।
नहीं चाह कुछ इसके सिवा, प्रभो मम विनय सुन लीजिये॥

इतनी बढ़े उत्कण्ठा कि मन में यही इक लग्न हो।
इस लग्न की पूर्ति में बस 'किंकर' सदा ही मग्न हो॥
दूरी व देरी छोड़ भगवन्, रीझिये अब रीझिये।
'तथास्तु' अब कह ही दो, प्रभो! मम विनय सुन लीजिये॥

अभी जाने वृन्दा के ब्रज की

(श्रीवृन्दावन और ब्रज के भाव और लीला स्थलियों का साकेंतिक वर्णन पत्रिका के हर अंङ्क में।)

गताङ्क से आगे :—

श्री नाथ जी का मन्दिर:- यह मन्दिर जतीपुरा मुखारविंद के पास गिरिराज जी के ऊपर है। दण्डौती शिला के पास से ऊपर जाने का मार्ग है। मन्दिर पर दो शिखर हैं। एक शिखर निज मन्दिर के ऊपर तथा दूसरा शिखर शैय्या मन्दिर के ऊपर है। जहाँ श्रीनाथजी का स्वरूप था वहाँ निज मन्दिर में आजकल श्रीनाथ जी के प्रथम चरण के चौकी के दर्शन और चित्र जी भी विराजते हैं। इनकी सेवा होती है। श्रीनाथ जी का मूल स्वरूप नाथद्वारा में है। अन्दर शैय्या मन्दिर में गुफा है। गुफा से नाथद्वार जाने-आने का मार्ग है। श्रीनाथ जी इस गुफा से नाथद्वार गुसाईं जी की सेवकिनी अजबकुंवरी बाई को नित्य दर्शन देने जाते हैं। अब भी नाथद्वार चले जाते हैं और रात्रि में शयन करने यहाँ आते हैं। सेवायत यहाँ रोजाना प्रभु के शयन को शैय्या बिछाते हैं। शैय्या पर बिछे बिस्तरों पर रोजाना पड़ती सिलवटें प्रभु के शयन लीला को प्रमाणित करती हैं।

बड़ी परिक्रमा समाप्त कर अब छोटी परिक्रमा में प्रवेश करते हैं। दोनों को प्रमाण कर आगे बढ़ें।

उद्धव कुण्ड:- परिक्रमा मार्ग में दाहिनी हाथ पर यह कुण्ड है। श्रीउद्धवजी ब्रजगोपियों के चरण रज प्राप्ति हेतु इस स्थान पर गुल्मलता रूप धारण कर भजन कर रहे हैं। श्रीपरिक्षितजी के अनुरोध पर उद्धवजी ने श्री भागवत् कथा एक महीने तक यहाँ पर किया था।

राधाकुण्ड:- श्रीराधाजी सखियों के साथ अपने हाथ से यह कुण्ड खोदकर प्रकट किया था। कार्तिक कृष्ण अष्टमी (अहोई अष्टमी) मध्य रात्रि में यह कुण्ड प्रकट हुआ था। उस दिन मध्य रात्रि में भक्तगण राधाकुण्ड में स्नान करते हैं। उस समय बहुत भीड़ रहती है। ऐसी मान्यता है कि अगर कोई नि:सन्तान दम्पत्ति एक साथ अहोई अष्टमी की मध्य रात्रि में राधाकुण्ड में स्नान करता है तब जल्द ही उसके बच्चे की किलकारियाँ गूँजने लगती हैं। यहाँ स्नान करने वाली माताएँ केश खोलकर राधाजी से सन्तान का वरदान माँगती हैं और राधाजी उनकी गोद भरती हैं। राधाकुण्ड की परिक्रमा लगती है। राधाकुण्ड के चारों तरफ मन्दिर ही मन्दिर हैं। यह कुण्ड लोप हो गया था। श्री चैतन्य महाप्रभु ने यहाँ आकर दोनों कुण्डों का लोगों से परिचय कराया। राधाकुण्ड का महात्म्य इतना अधिक है कि गाँव का नाम ही राधाकुण्ड हो गया।

कृष्ण कुण्ड:- श्री राधाकुण्ड से सटा हुआ यह विशाल कुण्ड है। श्रीकृष्ण ने इसे प्रकट किया था। दोनों कुण्डों के बीच में संगम है। जब श्रीकृष्ण ने बैल रूपी अरिष्टासुर का वध कर दिया तो श्रीराधा जी ने गऊ हो या गऊ का पुत्र बात एक ही है। आपको गऊ हत्या का पाप लगा है। हमें स्पर्श मत करना। प्रायश्चित पूछने पर राधाजी बोली- पहले सब तीर्थों में स्नान करके आओ। पाप धुल जाने पर हमसे बात करना। तब श्री कृष्ण ने कहा- तब सब तीर्थों को यहीं बुला लेते हैं, श्रीकृष्ण ने अपनी बांसुरी से एक कुण्ड खोदा। तब ध्यान करते ही सब तीर्थ गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियाँ घड़ा भर-भर कर सामने उपस्थित हो गई। तब श्रीकृष्ण ने स्नान कर आत्म शुद्धि की।

क्रमशः

साभार : सत्यनारायण, केशव धाम, श्रीवृन्दावन

श्री राम कथा - मानस गीता (19 से 27 नवम्बर)

पूज्य मोरारी बापू जी का
गीता ज्ञान संस्थानम् आगमन

पौधारोपण

श्री श्री कृपा बिहारी दर्शन

कुरुक्षेत्र तीर्थ दर्शन

ब्रह्मसरोवर

भद्रकाली

स्थानेश्वर

श्री राम चरित मानस को शीश पर धारण कर कक्षा स्थल की ओर श्री मनोहर लाल (CM)
लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं यजमान

दीप प्रज्वलन पूज्य कार्ष्णि महाराज श्री, मलूकपीठाधीश्वर
स्पकीर, सी.एम एवं अन्य सन्त

लोक सभाध्यक्ष एवं मुख्यमन्त्री को स्मृति चिन्ह

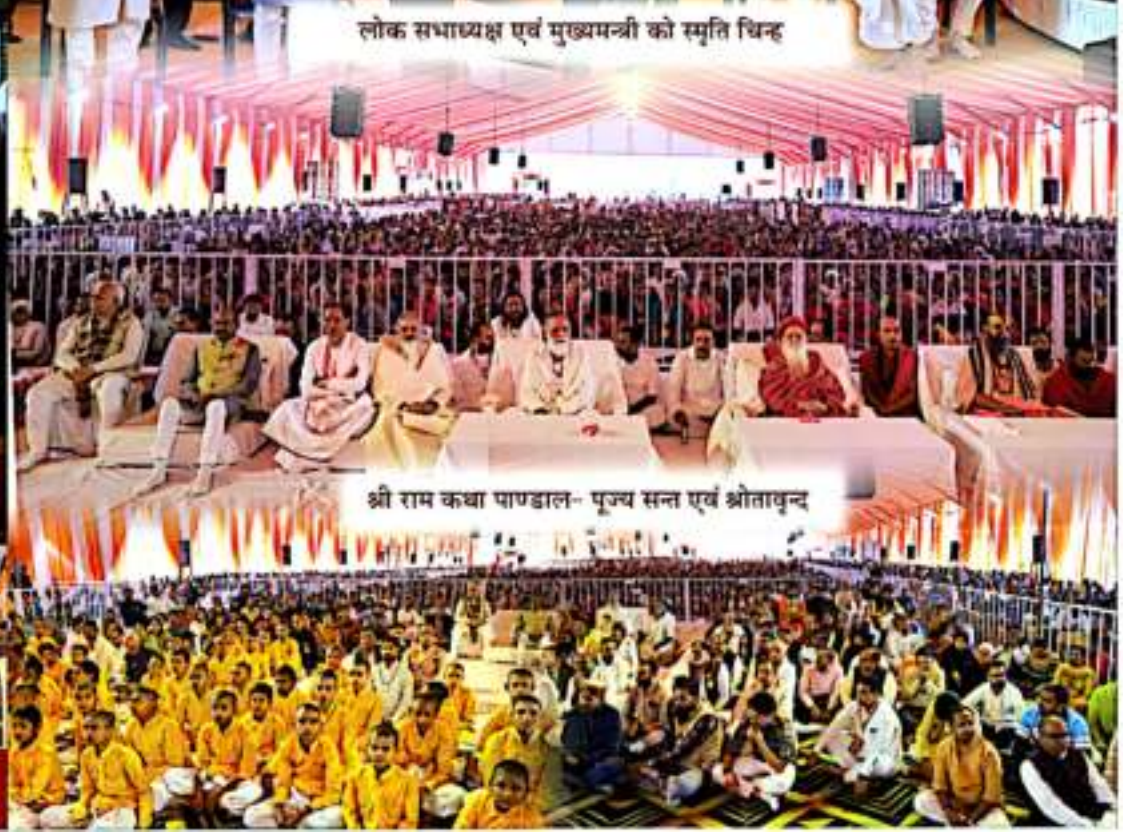

श्री राम कथा पाण्डाल- पूज्य सन्त एवं श्रोतावृन्द